गुलिस्ताने चारबैत

गुलिस्ताने चारबैत

संकलन
मोहम्मद अनीस अन्सारी

सम्पादक
डॉ. कपिल तिवारी

सहायक सम्पादक
अशोक मिश्र

भोपाल उत्सव आयोजन समिति के लिए

मध्यप्रदेश आदिवासी लोक कला परिषद् द्वारा प्रकाशित

© स्वत्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक	:	मध्यप्रदेश आदिवासी लोक कला परिषद् मुल्ला रमूजी संस्कृति भवन, आधार तल, बाणगंगा, भोपाल-462003 दूरभाष : 2551878
प्रकाशन वर्ष	:	जनवरी, 2003
मूल्य	:	25/- (पच्चीस रूपये)
छाया चित्र	:	परिषद् संकलन से
शब्दांकन	:	मध्यप्रदेश आदिवासी लोक कला परिषद्, भोपाल
मुद्रण	:	मल्टी ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल

- पुस्तिका से संबंधित समस्त विवादों का न्यायालयीन कार्यक्षेत्र भोपाल होगा
- पुस्तक में छपी सामग्री के किसी भी माध्यम द्वारा उपयोग के पूर्व परिषद् से अनुमति लेना आवश्यक होगी।
- पुस्तिका में प्रकाशित समस्त सामग्री संकलनकर्त्ता, लेखक की अपनी है, आवश्यक नहीं है कि परिषद् इससे सहमत हो।

अनुक्रम

इस पुस्तक के बारे में
चारबैत कला की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
भारत में चारबैत कला का आगमन
चारबैत गायकी की शैली और स्वरूप
मध्यप्रदेश में चारबैत का आगमन और इतिहास
नवाबी दौर में चारबैत का चलन और उसका विकास
चारबैत का भविष्य
भोपाल में चारबैत कला के विकास का संक्षिप्त विवरण
चारबैत कला के बचाने के प्रयास
चारबैत में गायी जाने वाली विभिन्न प्रकार की शायरी
चारबैत कला का दस्तावेज़ीकरण
चारबैत में ढफ़ (संगीत) का उपयोग
चारबैत शायरी
चारबैत जानने वालों से साक्षात्कार
चारबैत पार्टी के सदस्यों/कलाकारों के नाम एवं कैसेट में रिकार्ड किया गया कलाम

अजय सिंह
मंत्री
पर्यटन, संस्कृति एवं ग्रामीण विकास विभाग

मध्यप्रदेश शासन

भोपाल में नवाबी दौर में विकसित हुई लोक गायन परम्परा 'चारबैत' आशु कविता और संगीत परम्परा है। मूल रूप से अरब देश और ईरान तथा अफगानिस्तान से होती हुई यह गायन परम्परा मध्यकाल में अफगान पठान शासकों के साथ भारत आई। रामपुर, टौंक, हैदराबाद और भोपाल में विशेष रूप से इसे संरक्षण और संवर्धन मिला। भोपाल रियासत के जमाने में अनेक प्रख्यात शायरों ने चारबैत शायरी में उत्कृष्ट काव्य सृजन किया और अनेक लोक गायकों ने इस शैली में भोपाल को राष्ट्रीय प्रतिष्ठा दी। देश-काल के परिवर्तन के कारण यह लोक विधा आज उतनी लोकप्रिय नहीं रह गयी, इसलिए विशेष रूप से इसके संरक्षण और विकास तथा उचित दस्तावेजीकरण के लिए ठोस प्रयासों की आवश्यकता है।

भोपाल उत्सव के पहले ही वर्ष चारबैत पर केन्द्रित एक विशेष आयोजन के साथ इसे फिर से आम जनता के बीच लोकप्रिय बनाने के प्रयास किये गये। इस वर्ष भोपाल, रामपुर, टोंक की श्रेष्ठ चारबैत गायन मंडलियों को आमंत्रित किया गया है तथा चारबैत पर केन्द्रित एक विशेष मोनोग्राफ का प्रकाशन भी जिसे मध्यप्रदेश आदिवासी लोककला परिषद् द्वारा प्रकाशित किया गया है। इसमें 'चारबैत' की काव्य और संगीत परम्परा का इतिहास सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, काव्य परम्परा का संकलन और भोपाल के श्रेष्ठ चारबैत गायकों के साक्षात्कार शामिल किये गये हैं। मोहम्मद अनीस अनसारी ने इसे श्रमपूर्वक तैयार किया है, इसके लिए हम श्री अनसारी के बहुत आभारी हैं। इस अवसर पर मध्यप्रदेश आदिवासी लोक कला परिषद् द्वारा चारबैत गायिकी पर एक ऑडियो सी.डी. तथा कैसेट भी जारी किया जा रहा है। हमें विश्वास है कि इन प्रयत्नों से भोपाल की इस विशेष लोक परम्परा को नया उन्मेष प्राप्त होगा।

(अजय सिंह)

पुस्तक के बारे में

चारबैत पर पुस्तक तैयार करने के संबंध में जो कठिनाइयाँ आयी हैं उन्हें बताना बहुत मुश्किल है। फिर भी मैं डॉ. कपिल तिवारी जी का बहुत शुक्रगुज़ार हूँ कि उन्होंने चारबैत कला पर पुस्तक लिखने का कार्य मुझे सौंपा।

मुझे उस समय बहुत हैरानी हुई जब डॉ. कपिल तिवारी ने बताया कि मध्यप्रदेश आदिवासी लोक कला परिषद् चारबैत कला पर आधारित एक वीडियो कैसेट तैयार करने की योजना बना रही है। किसी ऐसी कला पर जिसका आज के साधारण व्यक्ति को कुछ पता नहीं। चारबैत कला धीरे-धीरे विलुप्त होती जा रही है, ऐसी स्थिति में उसे सुरक्षित रखने की दृष्टि से उसका दस्तावेज़ीकरण किया जाना सार्थक है। उन्होंने बताया कि चारबैत कला पर भोपाल की छः चारबैत पार्टियों का एक वीडियो कैसेट तैयार किया जायेगा और उसपर एक पुस्तक इस कला के बारे में लिखी जायेगी। इस कला को सुरक्षित रखने में उनका जो प्रयास है वह बहुत महत्वपूर्ण है।

मुझसे पहले उर्दू के विख्यात शायर, नाटककार, रंगकर्मी स्व. प्रोफेसर फज़ल ताबिश साहब यह काम कर रहे थे। किन्तु अचानक हमारे बीच से उनका चला जाना भोपाल की कला एवं संस्कृति के क्षेत्र के लिए बहुत हानिकारक रहा। वे हमारी सांस्कृतिक गतिविधियों के केन्द्र बिन्दु थे।

मैं जनाब मसऊद हाशमी, जनाब रशीद अन्जुम, जनाब मसऊद रज़ा का बहुत शुक्रगुज़ार हूँ कि उन्होंने इस पुस्तक की तैयारी में मेरी बहुत सहायता की। इसके अतिरिक्त मैं हाज़ी अब्दुल हमीद, जनाब हकीम उद्दीन, जनाब नन्ने खाँ और जनाब अब्दुल हफ़ीज़ साहब का भी बहुत एहसानमन्द हूँ कि उन्होंने इस कला के बारे में अनेक महत्वपूर्ण जानकारियाँ दीं।

मुझे उम्मीद है कि इस दुर्लभ कला पर मेरे द्वारा किये गये इस प्रयास को, जो पुस्तक के रूप में आपके हाथों में है उसे कला और साहित्य के क्षेत्र में यदि पसंद किया गया तो यही मेरी सफ़लता होगी।

-मोहम्मद अनीस अनसारी 'अनीस'

चारबैत

फारसी में 'बैत' शब्द का अर्थ है 'पंक्ति'। चारबैत का अर्थ, चार पंक्तियों वाली कविता है। इसमें हर बंद, चार मिसरों का होता है। और यह एक विशेष 'बहर' (मीटर) में लिखी जाती है।

मुग़लकाल में, जब अफ़गान सिपाही, मुग़ल फ़ौज में शामिल होने के लिए, हिन्दुस्तान आये, तो वे अपने साथ, अपने लोकगीत भी लाये। इसीलिए चारबैत को 'पठानी राग' भी कहते हैं।

पठान सिपाहियों के मनोरंजन का यह साधन धीरे-धीरे आम लोगों में भी लोकप्रिय होता गया और चारबैत की महफ़िलें, जिन्हें 'मजलिस' कहा जाता था, गाँव, मेले और त्यौहारों में आयोजित की जाने लगीं। फ़ारसी, पश्तो के अलावा उर्दू में भी चारबैत लिखे और गाये जाने लगे।

चारबैत का आधार, गायिकी है। इसमें कोई साज़ बजाया नहीं जाता। ताल के लिए केवल 'दफ़' का उपयोग किया जाता है।

चारबैत की परम्परा, भारत में चार सौ वर्ष पुरानी है। आज भी रामपुर, टोंक और भोपाल में इसे गाने वाले मौजूद हैं। लेकिन धीरे-धीरे यह कला ख़त्म होती जा रही है।

हर विषय पर चारबैत लिखे गये हैं। ग़ज़लों में जो श्रृँगार रस होता है वह चारबैत में भी पाया जाता है। त्यौहारों, मौसम आदि विषयों पर भी चारबैत लिखे गये हैं। उदाहरण के लिए 'बरसात' पर लिखी चारबैत का यह बंद देखिये-

बरसात में मत जाओ पिया, तुम पे मैं वारी
बादल झुके आते हैं, घटा छाइ है कारी।

छाइ घटा घनघोर, गरजने लगे बादल
बिजली भी चमकने लगी हर सिम्त झलाझल

पुर्वाई के झोकों की ज़रा देख तो हलचल
दिल काँपता है मेरा, लरज़ती हूँ मैं सारी

बरसात में मत जाओ पिया तुम पे मैं वारी॥

या, 'बसंत' ऋतु पर लिखे चारबैत का यह बंद-

आया बसंत, आमदे फ़सले बहार है
साक़ी पिला शराब, के दिल बेक़रार है

सच तो यह है बसंत, बड़ा काम कर गया
अच्छा हुआ, ज़माना ख़िज़ा का बदल गया

फूलों के रंग रंग से, गुल्ज़ार भर गया
रौनक़ फ़िजा से सहने चमन, लाला ज़ार है

आया बसंत, आमदे फ़सले बहार है

पहले, चारबैत का विषय, सूफ़ियाना हुआ करता था। फिर इसमें आशिक़ाना मज़मून बाँधे जाने लगे और हर तरह के विषय इसमें शामिल होते गये।

चारबैत, दो या चार पार्टियों के दरमियान मुक़ाबले की शक्ल में आरास्ता की जाती है और जीतने वाली पार्टी को इनाम दिया जाता है। इसलिए इसमें सवाल-जवाब, नोक-झोंक और अन्त्याक्षरी का भी आनंद आता है। जिस बहर और क़ाफ़िया रदीफ़ में एक पार्टी ने चारबैत सुनाया, दूसरी पार्टी उसी में अपना चारबैत सुनाने की कोशिश करती है।

चारबैत की बंदिश अनेक रागों में होती है। कुछ जाने, कुछ अनजाने। यह एक पारम्परिक कला है। इसलिए इसकी लय, धुन और ताल भी पारम्परिक है, जिनमें बहुत कम अंतर आया है। चारबैत के विषय के लेहाज़ से ही उसकी बंदिश होती है। चारबैत गाने वाले, संगीत सीखे हुए लोग नहीं होते। जो कुछ अपने उस्ताद से धुनें उन्हें सीखने का अवसर मिलता है, वह उन्हीं पारम्परिक धुनों में गाते हैं। परन्तु, अच्छी गायिकी के लायक़ आवाज़ होना आवश्यक है और सुरताल का थोड़ा ज्ञान भी।

चारबैत गाये जाने वाली बंदिशों में राग दरबारी, मालकौंस, देस, भैरवी, जयजयवंती आदि की झलक मिलती है।

चारबैत गाने वाली हर पार्टी में एक लीडर होता है, और बाक़ी चार, छह या इससे अधिक साथी। गाने का ढंग बहुत कुछ कव्वाली से मिलता है। ताली के बजाय 'दफ़' से ताल दिया जाता है, वह भी टीप की पंक्ति पर। बंद के बाक़ी तीन मिसरे, बग़ैर 'दफ़' बजाये, गाये जाते हैं।

इसमें कविता का भरपूर आनंद मिलता है और नोक-झोंक, सवाल-जवाब का मजा भी। चारबैत गाने वाले, कुछ बहुत सुरीले और जानकार गायकों को भी मैंने सुना है।

भोपाल की मुख्य चारबैत पार्टियाँ, बज्में ज़की, (ज़की वारसी), बज़्मे शाहिद, बज़्में हमीद तथा बज़्मे रक़ीब हैं।

आवश्यकता इस बात की है कि इस विलुप्त होती हुई कला को, नया जीवन दिया जाये।

-जुलफ़िकार अली

चारबैत कला की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

चारबैत का इतिहास सदियों पुराना है। इस कला का आरंभ अरब देश में हुआ। उस समय अरब लोग बहुत कम शिक्षित थे। उस युग में अरबी लोग दफ़ बजाकर अपने वार्षिक उत्सवों, धार्मिक त्यौहारों के अतिरिक्त विभिन्न आयोजनों के अवसरों पर क़बीले के बहादुरों के प्रसिद्ध कारनामों का बखान किया करते थे और वर्तमान बहादुरों की हौसला अफ़ज़ाई किया करते थे। तारीफ़ के साथ-साथ दुश्मनों की पराजय और अपनी विजय के दृश्यों को शब्दों में बयान कर दाद हासिल करते थे। अरब जाति के लोग सदैव क़बीले की शक्ल में रहते थे और क़बीले का एक सरदार होता था। क़बीले हमेशा अपने नाम से जाने जाते थे।

इस्लाम धर्म के आने के बाद अरबों में धीरे-धीरे शिक्षा का विस्तार हुआ। इसका असर यह हुआ कि चारबैत की कला के भी विकास के दरवाज़े खुले। आरंभ में विशेषकर यह बात थी कि अरब लोग जब युद्ध में विजय हासिल कर वापस आते थे तो उस समय सफ़लता की खुशी का इज़हार करने के लिए ही वे दफ़ बजाकर जश्न मनाया करते थे। चारबैत में शायरी पढ़ने या गाने की अपनी एक विशेष शैली है। अरब में चारबैत में आमतौर पर नातपाक पढ़ी जाती थी।

इसीलिए आज भी चारबैत गायिकी के आरंभ में नातपाक गायी जाती है। उसके बाद सूफ़ियाना कलाम, इश्क़िया

कलाम और बहादुरों को खुश करने के लिए उनकी तारीफ़ में कविताएँ पढ़ते हैं। क़बाइली जीवन से निकलकर यह कला धीरे-धीरे शहर में आ गई। चारबैत बुनियादी तौर पर चार व्यक्तियों की तकरार (आपस में बातचीत) से आरंभ होता है।

अरब देशों के बाद इस कला को ईरान के लोगों ने अपनाया और ईरान में इस कला के विस्तार एवं विकास के लिए अनेक महत्वपूर्ण कार्य किये गये। अरब में अरबी भाषा में चारबैत गायी जाती थी। ईरान में अरबी भाषा के अतिरिक्त स्थानीय भाषा यानी फ़ारसी में भी गाया जाने लगा। फ़ारसी भाषा के कई शायरों ने चारबैत शैली के हज़ारों कलाम लिखे और गाये।

ईरान के बाद यह कला अफ़गानिस्तान में आयी। अफ़ग़ान पठान जाति के लोग भी क़बाइली जीवन गुज़ारते थे। इसी कारण यहाँ चारबैत को क़बाइली राग या पठानी राग भी कहते थे। अफ़गानिस्तान की मुख्य भाषा पश्तो है। फ़ारसी के बाद यहाँ पश्तो भाषा में चारबैत गाया जाने लगा। यहाँ यह लिखना आवश्यक है कि चारबैत में दफ़ या तब्बल बजाया जाता है। दफ़ या तब्बल का घेरा लकड़ी या पीतल का होता है जिस पर बकरी, हिरन और चिकारे की खाल मढ़ी जाती है। एक गोल लकड़ी का फ्रेम बनाकर उसके एक तरफ़ खाल को मढ़ (चढ़ाना) दिया जाता है। खाल के सूखने पर दफ़ तैयार हो जाता है। दफ़ या तब्बल ही आज की चारबैत की विशेष निशानी है और संगीत का काम इसी दफ़ से लिया जाता है। दफ़ या तब्बल चारबैत गायिकी का मुख्य वाद्य और पहचान बन गया है।

भारत में चारबैत की कला का आगमन

मुग़ल, अफ़ग़ान, कुर्द, तुर्क और पठानों का जब भारत में आने का सिलसिला आरंभ हुआ, उस समय उनके साथ 'दफ़' भी आया, जो विजय के विशेष अवसरों पर बजाने के काम आता था। जिस समय मोहम्मद बिन क़ासिम ने दरयाऐ सिंध के किनारे फ़ौज को उतारा, उस समय भी उनके साथ दफ़ था। अफ़गानिस्तान से जब मुग़ल बादशाह बाबर भारत आया, उस समय भी उसकी फ़ौज के साथ दफ़ था। इससे पता चलता है कि चारबैत में दफ़ बजाकर गाने का रिवाज आरंभ से ही चला आ रहा है। शुरू से दफ़ चारबैत का केन्द्रीय वाद्य रहा है। चारबैत की कला बहुत पुरानी है। इसका संबंध फ़ौजी पठानों से है। जैसा कि कहा जाता है यह कला हमारे देश में अफ़गानिस्तान से आयी है। मुग़लों के दौर से आज तक ये कला किसी न किसी रूप में बढ़ती रही है या जीवित चली आ रही है। भारत में यह कला सबसे पहले हैदराबाद दक्षिण में आयी, उस समय इसकी भाषा फ़ारसी थी, लेकिन बाद में जब हिन्दी और उर्दू का विकास हुआ तब चारबैत की भाषा उर्दू और हिन्दी दोनों हो गई। उत्तर भारत के अतिरिक्त देश के अन्य भागों में भी इसकी गायिकी की अपनी एक अलग शैली और स्थान बनता चला गया। चारबैत को आरंभ में अखाड़ा कहते थे। आजकल चारबैत को पार्टियाँ भी कहते हैं।

स्वतंत्रता से पहले भारत लगभग छोटी-बड़ी छः सौ रियासतों में बँटा हुआ था। जिनमें से कई रियासतों की अपनी फ़ौज हुआ करती थी। उस ज़माने में विशेषकर राजा और नवाब अपनी पलटन में पठानों को भी बहुतायत से रखते थे। चारबैत

इन्हीं पठानों का लोकगीत है, जिसमें फ़ौजी तासीर है, जिसे पठान राग भी कहते हैं।

पलटन में फ़ौजी लोग फुरसत के अवसर पर अपनी जुबान में अपने मज़बूत बाजुओं से तब्बल बजाते हुए कभी तो अपनी विजय और कभी अपनी बहादुरी तथा कामयाबी का जश्न मनाते और कभी अपने वतन और प्रेमी की याद में जुदाई के गीत गाते थे तो कभी त्यौहार के अवसरों पर खुशी के गीत गाते थे।

हैदराबाद में चारबैत का गायन सबसे पहले फ़ौज की बैरिकों में पहुँचा था और बाद में स्थानीय आम लोगों के बीच यह कला पसन्द की जाने लगी और इसका रिवाज विभिन्न पार्टियों की शक्ल में बढ़ता गया।

हैदराबाद के बाद रामपुर में इस कला को बहुत सराहा गया और इसके विकास के लिए महत्वपूर्ण कार्य किये गये। हमारे देश में रामपुर पहला शहर है, जिसने चारबैत की कला को ज़िन्दा रखने के लिए अपने शहर में अनेक चारबैत पार्टियाँ बनाई और पूरे देश के विभिन्न सांस्कृतिक केन्द्रों में इन पार्टियों ने कार्यक्रम प्रस्तुत किये। रामपुर में इस कला को जानने वाले आज भी बहुत लोग मौजूद हैं। रामपुर में जिन शायरों ने चारबैत के कलाम लिखे या जिन पार्टियों ने इस कला को विकसित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया उसमें प्रमुख रूप से सर्वश्री हाफ़िज़ इस्माईल सबर उस्ताद, क़मर उस्ताद, मियाँ खाँ, मेहशर, जौहर और मेहबूब अली इत्यादि हैं।

पार्टियों में खासकर जिन्हें अखाड़े की संज्ञा दी जाती है। रामपुर में चारबैत की आज भी मशहूर पार्टियाँ हैं जिनमें मियाँ खाँ का अखाड़ा, मेहबूब अली उस्ताद का अखाड़ा और क़मर उस्ताद का अखाड़ा आदि प्रसिद्ध हैं।

इसके अतिरिक्त मुरादाबाद में आशिक़ हुसैन की चारबैत पार्टी आज भी देशभर में बहुत प्रसिद्ध है। मुरादाबाद में हामिद साहब ने बहुत सी चारबैतें लिखीं।

अमरोहा में जनाब अत्तन साहब की पार्टी और चाँदपुर में जनाब इक़बाल साहब की पार्टी आज भी सक्रिय है और देशभर में कार्यक्रम देती रहती है।

राजस्थान के टोंक शहर में इस कला को बहुत फलने-फूलने का अवसर मिला। यहाँ जो पार्टियाँ आज भी मशहूर हैं उनमें उबेद उस्ताद की पार्टी और चमन उस्ताद की पार्टी विशेष लोकप्रिय है। जो चारबैत के कार्यक्रम देशभर में प्रस्तुत करने जाती है। राजस्थान में चारबैत पार्टी को अखाड़ा कहते हैं। टोंक में जिन शायरों ने चारबैत लिखी है उनमें असग़र अली आबरू, हाफ़िज अब्दुल्लाह हैराँ, मिसकीन, ख़फी नूर, सैय्यद और बेताब इत्यादि के नाम बहुत मशहूर हैं।

चारबैत गायिकी की शैली और स्वरूप

उर्दू साहित्य में शायरी का अपना एक अलग स्थान है। शायरी की अनेक किस्में हैं जैसे :- गज़ल, नज़्म, मसनवी, मरसिया, क़सीदा, क़तआत और रूबाईयात इत्यादि। क़व्वाली और चारबैत की कला भी प्राचीनकाल से चली आ रही है। उर्दू शायरी में गज़ल और क़व्वाली के अतिरिक्त चारबैत गाने का चलन है।

चारबैत भारतवर्ष में हैदराबाद के अतिरिक्त उत्तरप्रदेश में रामपुर, चाँदपुर, मुरादाबाद, बिजनौर, अमरोहा, राजस्थान में जोधपुर, टोंक और जयपुर, मध्यप्रदेश में मुख्यत: भोपाल ही ऐसा अदब नवाज़ और शहरे ग़ज़ल शहर है, जहाँ इस कला को बहुत से शायरों और चारबैत फ़नकारों ने आज तक जीवित रखा है।

चारबैत शायरी की एक ऐसी शैली है जिसमें इश्क़ मोहब्बत के साथ शौर्य का बखान करने का अवसर होता है।

चारबैत के अखाड़े या पार्टियाँ मैदान में मंच बनाकर बीस-पच्चीस फिट की दूरी पर लकड़ी के तख़त पर आमने-सामने बैठकर एक दूसरे पर शायरी के माध्यम से विजय प्राप्त करने की कोशिश करती हैं। चारबैत गायन में सवाल-जवाब होते हैं। चारबैत के कार्यक्रम रात में होते हैं, और जब चारबैत गाने वाली पार्टियाँ अच्छी दमदार हों तो प्रतियोगिता में आनन्द द्विगुणित हो जाता है और कार्यक्रम रात भर भी चल सकता है। अच्छी गायिकी को सुनने के लिए लोग दूर-दूर से आते हैं।

चारबैत पार्टी में आठ से पन्द्रह तक सदस्य/कलाकार होते हैं। उसमें एक उस्ताद होता है और एक ख़लीफ़ा। पार्टी का ख़लीफ़ा पहले से इसलिए बना दिया जाता है कि उस्ताद के बाद ख़लीफ़ा अपने उस्ताद का नाम जीवन भर चलाता है। उस्ताद या ख़लीफ़ा उस समय बनाया जाता है, जब शहर की या शहर से बाहर की पार्टियाँ चारबैत के आयोजन में भाग लेती हैं। इसके लिए एक बड़े मैदान में चारबैत का आयोजन किया जाता है। इसी समय आयोजन में किसी उस्ताद के हाथों जिसको पगड़ी बाँधी जाती थी, वह ख़लीफ़ा मान लिया जाता था। इसको दस्तार बन्दी कहते हैं। यह रिवाज आज भी चारबैत मण्डलियों में प्रचलित है। अखाड़े में उस्ताद का सम्मान सबसे अधिक होता है। उस्ताद प्रायः शायर होते हैं, जो चारबैत के लिए नियमित रचनाएँ लिखते हैं। अच्छे शायरों के कलाम सुनाते हैं और तत्काल रचनाएँ लिखकर भी देते हैं।

चारबैत लिखने की अपनी एक विशेष शैली है। चारबैत चार मिसरों की रिआयत से लिखी जाती है। मतले के बाद चार मिसरों पर आधारित एक बन्द होता है। जिसमें तीन मिसरे हमक़ाफ़िया होते हैं और चौथा मिसरा मतले के रदीफ़ और क़ाफ़िया से जा मिलता है, इसे चौबन्दी कहते हैं। जैसे :-

मतला है-

कब मैंने कहा है कि ज़माने के लिए आ
सोई हुई क़िस्मत को जगाने के लिए आ

भूली हुई यादों की धनक जाग उठी है।
ग़ुज़री हुई रातों की महक जाग उठी है।
फिर प्यार के लम्हों की खनक जाग उठी है।
आ हाल को माज़ी सा बनाने के लिए आ।

चारबैत के हर बन्द में चार मिसरे होते हैं और एक चारबैत कम से कम चार बन्दों पर आधारित होती है। किसी में पाँच और छः बन्द भी होते हैं।

चारबैत अनेक भाषाओं में लिखी गई जैसे अरबी, फ़ारसी, सिंधी, हिन्दी, खड़ी बोली, राजस्थानी, पश्तो, उर्दू, मराठी, पंजाबी और ग्रामीण बोलियों इत्यादि में।

चारबैत खड़ी टीप और आड़ी टीप दोनों प्रकार से गायी जाती है। रामपुर में चारबैत आड़ी टीप में गायी जाती है, जबकि भोपाल में चारबैत हर रंग में गायी जाती है। यदि सामने वाली पार्टी खड़ी टीप में गाती है तो उसका उत्तर भोपाल की पार्टी खड़ी टीप में ही देगी। भोपाल की चारबैत पार्टियाँ खड़ी और आड़ी दोनों टीप गाने में महारत रखती हैं।

खड़ी टीप गाते समय शेर को स्वर द्वारा ऊँचा खींचा जाता है और धीरे-धीरे स्वर को नीचे लाकर पूरा किया जाता है। चारबैत गायिकी को खड़ी टीप में गाना बहुत कठिन कार्य है, और हर कोई कलाकार खड़ी टीप में गाने का माहिर नहीं होता। इसको गाने वाले कलाकार की साँस बहुत लम्बी होना आवश्यक है, जबकि खड़ी टीप के मुक़ाबले आड़ी टीप में गाना इतना कठिन कार्य नहीं है। आड़ी टीप में गाते समय शैर को जिस प्रकार हल्के स्वर से आरंभ किया जाता है उसी प्रकार हल्के स्वर के साथ ही उसे पूरा किया जाता है। आड़ी टीप चारबैत गायिकी का हल्का-फुल्का अंदाज़ है किन्तु इसमें भी बहुत सावधानी बरती जाती है। ताकि आरंभ से अंत तक स्वर का एक सा भाव बना रहे।

खड़ी टीप गायिकी का अंदाज़ बहुत ही लुभावना और ध्यानाकर्षक होता है। दर्शक भी इससे बहुत लुत्फ़ अन्दोज़ होते हैं। वह कलाकार की क्षमता को बहुत ग़ौर और ध्यान से देखते हैं और एकदम वाह-वाह कह उठते हैं।

चारबैत उर्दू की एक ऐसी समूह गान शैली है। जिसकी गायिकी का भी अपना एक ख़ास अंदाज़ है। गायक कलाकार बहुत जोशो ख़रोश के साथ अपने जज़्बात (भावना) का इज़हार करते हैं, चूँकि चारबैत उई शायरी की सबसे अलबेली और बांकी विधा है जिसमें तन्ज़, छेड़छाड़, लगावट, हुस्नों इश्क़ और छीटेंबाज़ी को शेरों-शायरी में खूबसूरत आवाज़ और तरन्नुम के साथ एक विशेष अंदाज़ में गाया जाता है। इसमें दफ़ की थाप पर शेर को उठाने का अपना एक दिलकश और मख़सूस अंदाज़ है। तकरार का लुत्फ़ तभी आता है जब अलाप और तानें जोशो ख़रोश से लगाई जाती है।

गायिकी के दौरान उस समय दर्शकों को एक अद्भुत नज़ारा देखने को मिलता है जब दो प्रतियोगी अपनी कला का प्रदर्शन करते हुए मोज़ू मिसरे की तलाश में किसी एक को मिसरा लगाना मुश्किल होता है तो वह क्रोध में आकर और उत्तेजित होकर दफ़ को ही फाड़ डालता है। यह उत्तेजित दृश्य देखने लायक़ होता है।

मध्यप्रदेश में चारबैत का आगमन और इतिहास

मध्यप्रदेश राज्य में चारबैत की कला सबसे पहले जावरा में अदल शाह के द्वारा लायी गई। अदल शाह ने चारबैत के विकास के लिए बहुत प्रयास किये। स्वयं चारबैत लिखीं और अपनी एक पार्टी बनाई। जावरा में ही मज़हर उस्ताद और मिख़लास ने भी चारबैत लिखी और पढ़ी। अदल शाह जब भोपाल तशरीफ़ लाये तो सबसे पहले उन्होंने ही चारबैत को अखाड़े की शक्ल यानी पार्टी का नाम दिया। हालाँकि इससे पहले नवाबी दौर में चारबैत की बुनियाद रखी जा चुकी थी। लेकिन उसको पार्टी या अखाड़े की शक्ल नहीं दी गई थी। इस प्रकार अदल शाह ने इस विधा को पार्टी की शक्ल देकर साधारण जनता में प्रस्तुत किया।

भोपाल में बाक़ायदा चारबैत का आरंभ अब्दुल करीम रामपुरी के भोपाल आने के बाद हुआ। जो व्यापारी भोपाल के सरदार दोस्त मोहम्मद ख़ाँ के ज़माने में रामपुर उत्तरप्रदेश से नौकरी के सिलसिले में आये थे। वह अपने साथ चारबैत की कला और शायरी साथ लेकर आये और भोपाल में नौकरी के दौरान साधारण जनता के सामने चारबैत का कार्यक्रम प्रस्तुत करने लगे थे, जिसे लोगों ने बहुत पसन्द किया। तब भोपाल के कई लोगों ने चारबैत की कला को सीखा। अब्दुल करीम

रामपुरी ने इस कला के शौकीन लोगों को इकट्ठा करके और उन्हें प्रशिक्षण देकर भोपाल में पहला चारबैत अखाड़ा तैयार किया। बाद में उन्होंने बहुत से शिष्य बनाये और अपना ख़लीफ़ा नियुक्त किया। धीरे-धीरे भोपाल रियासत में कई स्थानों पर चारबैत की कई श्रेष्ठ मण्डलियाँ बन गईं।

पूर्व में चारबैत अखाड़े में उस्ताद ख़लीफ़ा और संरक्षक के अतिरिक्त पार्टी सदस्य एवं कलाकार होते थे। वर्तमान में सदस्यों एवं कलाकारों के अतिरिक्त कुछ नये पदाधिकारीगण भी होने लगे हैं, जैसे अध्यक्ष, ख़ज़ान्ची एवं सचिव आदि।

नवाबी दौर में चारबैत का चलन और उसका विकास

अब से लगभग तीन सदी पहले भोपाल नाम की एक छोटी सी रियासत थी, जिसमें अधिकतर गोंड आदिवासियों का निवास था। कमलावती इन्हीं में से एक प्रसिद्ध शासिका थीं। भोपाल खूबसूरत तालाबों और पहाड़ियों की नगरी रही है, जिसका प्राकृतिक सौन्दर्य हर किसी को सहज रूप से आकर्षित करता था, जिसे एक बहादुर फ़ौजी अफ़ग़ान सरदार दोस्त मोहम्मद ख़ाँ ने गोंडों की मशहूर रानी कमलावती से अपनी सैनिक सेवा के बदले में प्राप्त कर लिया था। आधुनिक रियासत भोपाल की यहीं से बुनियाद पड़ी थी। यही भोपाल आज मध्यप्रदेश की विकासशील राजधानी है जिसका एक हिस्सा पुराना भोपाल और दूसरा हिस्सा नया भोपाल कहलाता है। पुराने भोपाल की संस्कृति देश में अपनी एक अलग पहचान रखती है। यहाँ के स्थानीय माहौल पर जहाँ उन पठान हुक्मरानों और तहज़ीबज़दा बेगमों की ज़िन्दगी का गहरा प्रभाव पड़ा था। इसके कारण यहाँ आपसी सौहार्द्र की एक नई गंगाजमनी संस्कृति और सामाजिक जीवन की शुरूआत हुई। भोपाल राज्य अपनी एक अलग सांस्कृतिक पहचान गढ़ रहा था। खेल तमाशों में भाग लेना, मेलों में भाग लेना, गोटे करना, कुश्ती प्रतियोगिता कराना, त्यौहारों को मिलजुल कर मनाना यहाँ का ख़ास शौक़ था। चारबैतों, कव्वालियों और मुशायरों के आयोजन आये दिन होते रहते थे।

भोपाल, रामपुर, टोंक और जावरा आदि की तरह पठानों की रियासत बन चुकी थी। एक समय मुस्लिम रियासतों में

हैदराबाद के बाद भोपाल प्रथम दर्जे की रियासत गिनी जाती थी।

भोपाल में चारबैत का सिलसिला नवाब सरदार दोस्त मोहम्मद ख़ाँ के ज़माने से शुरू हुआ था। उनके बाद नवाब ग़ौस मोहम्मद ख़ाँ, नवाब नज़ीर मोहम्मद ख़ाँ, नवाब वज़ीर मोहम्मद ख़ाँ और नवाब जहाँगीर मोहम्मद ख़ाँ ने इस कला के विकास के लिए बहुत कार्य किया। इसके बाद भोपाल की बेगमात में पहली महिला फ़रमाँरवा सरकार कुदसिया बेगम के ज़माने से लेकर भोपाल के अंतिम ताजदार स्व. नवाब हमीदउल्लाह ख़ाँ के ज़माने तक चारबैत की कला हमेशा आगे बढ़ती रही। नवाब भोपाल के जन्म दिवस के अवसर पर रामपुर, टोंक आदि से चारबैत पार्टियाँ भोपाल आती थीं और वर्तमान के गाँधी मेडीकल कालेज के मैदान में जो उस ज़माने में मीना बाज़ार कहलाता था, तीन-तीन, चार-चार दिन तक चारबैतों के आयोजन होते रहते थे, और इन आयोजनों में नवाब साहब के साथ-साथ उनकी बैगमात, वज़ीर, जागीरदार, अधिकारीगण और आम जनता भी भाग लेती थी। इस अवसर पर नवाब साहब चारबैत पार्टियों में भाग लेने वाले सदस्यों एवं कलाकारों को सम्मान और इनामों इक़राम से नवाज़ते थे।

नवाबी दौर के पश्चात् भोपाल में जागीरदार लोग भी अक्सर चारबैत के आयोजन करवाते थे। लम्बे समय तक जागीरदारों ने इस कला के विकास के लिए अपना तन-मन और धन लगाया था।

चारबैत का भविष्य

आम जनता में चारबैत कला के प्रति उतनी उत्सुकता नहीं दिखाई देती, जितनी कि क़व्वाली, ग़ज़ल एवं मुशायरों के प्रति है। कुछ ही साहित्यिक संस्थाएँ हैं जिनका ध्यान इस लुप्त होती हुई कला के प्रति गया है। इनमें रामपुर, टोंक, मुरादाबाद और भोपाल की संस्थाएँ विशेष रूप से चारबैत के भविष्य के लिए चिंतित हैं। भोपाल की पार्टियाँ रामपुर (उत्तरप्रदेश) और टोंक (राजस्थान) तक कार्यक्रम देने जाती हैं। रामपुर में प्रतिवर्ष चारबैत का वार्षिक मेला आयोजित किया जाता है, जिसमें देशभर की मशहूर चारबैत मंडलियाँ शिरकत करती हैं। इसमें भोपाल की बज़्में ज़की वारसी चारबैत पार्टी कई बार रामपुर में भाग ले चुकी है। बज़्मे ज़की वारसी चारबैत पार्टी लगभग पचपन वर्षों से चारबैत कार्यक्रम प्रस्तुत करती चली आ रही है। इस चारबैत पार्टी ने मध्यप्रदेश आदिवासी लोक कला परिषद् के माध्यम से कई समारोहों में उल्लेखनीय भागीदारी निभाई है।

बज़्में ज़की वारसी वर्तमान में 'यादे हज्जन' के नाम से अखिल भारतीय वार्षिक आयोजन भोपाल के इक़बाल मैदान में हर वर्ष करती है, जिसमें रामपुर और टोंक की चारबैत पार्टियों को विशेष रूप से आमंत्रित किया जाता है, इसके अतिरिक्त भोपाल की अन्य चारबैत पार्टियाँ भी देश में कार्यक्रम देती रहती हैं।

दूरदर्शन के सीरियल 'सुरभि' में भी भोपाल की चारबैत पार्टियों के प्रोग्राम रिकार्ड होकर दिखाये जा चुके हैं। बी.बी.सी. लन्दन रेडियो पर भोपाल की चारबैत पार्टियों के कार्यक्रम रिकार्ड कर बजा चुकी है। मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति

विभाग की संस्था अखिल भारतीय अल्लामा इक़बाल अदबी मरकज़ ने 31 मार्च 95 को इक़बाल मैदान, भोपाल में एक भव्य चारबैत प्रोगाम का आयोजन किया था।

इस कार्यक्रम को हज़ारों दर्शकों ने देखा, सुना और पसन्द किया। दर्शकों की पसन्द का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि यह कार्यक्रम देर रात तक चलता रहा। इस कार्यक्रम में भोपाल की चारबैत की मशहूर चार पार्टियाँ बज़्में ज़की, बज़्में हज्जन, बज़्में हमीद और बज़्में शाहिद ने अपनी कला का बेहतरीन प्रदर्शन किया। भारत भवन, भोपाल में भी एक यादगार आयोजन चारबैत पर केन्द्रित किया गया था जिसमें भोपाल के हज़ारों कला रसिकों ने भाग लिया था।

वर्तमान में भोपाल की चारबैत पार्टियों के नाम इस प्रकार हैं जो इस कला को जीवित रखने और उसे बढ़ावा देने की भरपूर कोशिशें कर रही हैं, इनमें प्रमुख हैं- बज़्में ज़की चारबैत, बज़्में हमीद चारबैत, बज़्में हज्जन चारबैत, बज़्में हिलाल चारबैत, बज़्में शाहिद चारबैत और अंजुमने गुलिस्ताने चारबैत।

भोपाल में चारबैत कला के विकास का संक्षिप्त विवरण

भोपाल में जिन चारबैत गाने वाले उस्तादों ने इस कला में महारत हासिल की उनमें कुछ ख़ास नाम बहुत मशहूर हैं जैसे जनाब हाफ़िज़ रामपुरी, जनाब सैय्यद रमज़ान अली, जनाब सैय्यद ऐहसान अली, जनाब उस्ताद कल्लू दादा, जनाब करामत ख़ाँ, जनाब नूर ख़ाँ पठान, जनाब चन्दा ख़ाँ, जनाब चुन्ना ख़ाँ, जनाब अहमद करीम हज्जन उस्ताद, जनाब सुलेमान ख़ाँ उस्ताद, जनाब सईद भोपाली, जनाब जाफ़र ख़ाँ, जनाब हनीफ़ ख़ाँ, जनाब मुन्नू ख़ाँ, जनाब राजा ख़ाँ, जनाब अज़ीज़ ख़ाँ, जनाब रहमान उल्लाह ख़ाँ, जनाब असग़र अली, जनाब इरफान ख़ाँ, जनाब रईस ख़ाँ और जनाब ज़ियाउल हसन इत्यादि।

भोपाल के मशहूर चारबैत लिखने वाले कई शायरों के नाम लिये जा सकते हैं। जिन्होंने उर्दू शायरी में श्रेष्ठतम् चारबैत लिखकर चारबैत के साहित्य के ख़ज़ाने को भरपूर कर महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है–जैसे जनाब मुन्शी मोहम्मद हुसैन खाँ, कमतर ख़ाँ भोपाली, जनाब कर्नल इनाम उल्लाह ख़ाँ, जनाब ज़की वारसी, जनाब कैसर भोपाली, जनाब शैरी भोपाली, जनाब अहमद अली ख़ाँ आजिज़, जनाब आसी भोपाली, जनाब जब्बार ख़ाँ, जनाब ज़िकरी भोपाली, जनाब फ़िकरी भोपाली, जनाब तरज़ी भोपाली, जनाब सफ़दर हुसैन तालिब, जनाब हातिफ़ भोपाली, जनाब सैफ़ भोपाली, जनाब बाबू शुजाअत भोपाली, जनाब कैफ़ भोपाली, जनाब शाहिद भोपाली, जनाब वकील भोपाली, जनाब मोहम्मद मुन्शी भोपाली, जनाब हामिद सईद ख़ाँ भोपाली, जनाब सैय्यद रमज़ान अली, जनाब सिराज मीर ख़ाँ सहर भोपाली, जनाब सुहा मुजद्दी, जनाब आबिद अख़तर,

जनाब मसऊद हाशमी, जनाब मसऊद रज़ा भोपाली और जनाब डॉ. इकराम अकरम इत्यादि।

भोपाल की सबसे मशहूर चारबैत पार्टियों में जनाब अदल शाह की पार्टी थी जिसमें उस्ताद हिलाल ख़ाँ, उस्ताद इरफ़ान उल्लाह ख़ाँ, उस्ताद कल्लू ख़ाँ, उस्ताद रहमान उल्लाह ख़ाँ आदि शामिल थे। बाद में जनाब रमज़ान अली और जनाब इरफ़ान उल्लाह ख़ाँ ने अलग-अलग अपनी पार्टियाँ बना लीं जो आगे चलकर उनके नाम से मशहूर हुई थीं।

भोपाल के चारबैत गाने वाले उस्ताद और ख़लीफ़ाओं में से भी कुछ बहुत लोकप्रिय और प्रसिद्ध हुए हैं-

जनाब हिलाल ख़ाँ उस्ताद, जनाब बिलाल ख़ाँ उस्ताद, जनाब मारतोल ख़ाँ उस्ताद, पिस्तोल ख़ाँ उस्ताद, जनाब नसरूल्लाह ख़ाँ पठान उस्ताद, जनाब अमान उल्लाह ख़ाँ पठान, जनाब बाँके उस्ताद, जनाब मियाँजान उस्ताद, जनाब बिस्सू ख़ाँ उस्ताद, जनाब कसान ख़ाँ उस्ताद, जनाब असग़र उस्ताद, जनाब हमीद ख़ाँ उस्ताद, जनाब अदल शाह, जनाब करीमदाद ख़ाँ, जनाब अब्दुल ग़फूर ख़ाँ सनव्वर उस्ताद, जनाब कर्नल इनाम उल्ला ख़ाँ, जनाब अब्दुल हमीद ख़ाँ, जनाब नसीर ख़ाँ, जनाब अब्दुल ग़फ़ूर ख़ाँ, जनाब अहमद अली ख़ाँ आजिज़, जनाब रशीद ख़ाँ, जनाब खुर्शीद, जनाब बशारत अली, जनाब इरफ़ान उल्लाह ख़ाँ, जनाब इनाम उल्लाह ख़ाँ इत्यादि।

चारबैत कला को बचाने को प्रयास

चारबैत एक ऐसी कला है जिस पर अभी भी कोई विशेष रूचि नहीं ली जा रही है। इस कला के बारे में लिखित रूप में हमें चारबैत शायरी के रूप में तो मिल जाती है किन्तु इस कला शैली और प्रस्तुति पर अभी तक बहुत कम लिखा गया है। यह कला या तो पुराने चारबैत पार्टी के उस्ताद या ख़लीफ़ाओं के पास मिलती है, जो उन्होंने भी अपने उस्तादों से सुनकर सीखा है वरना यह कला सीना ब सीना चली आ रही है।

चारबैत की शायरी भी हमें उस्तादों के माध्यम से मिलती है जो उनके पास बरसों से डायरियों में क़ैद है। अभी तक कोई शायरी की या नस्र की पुस्तक भी प्रकाशित नहीं हुई है। इस कला के लिए हमारे देश के बहुत से शायरों ने बहुत सुन्दर शायरी की है।

पूर्व में चारबैत के जो आयोजन होते थे। उसमें फ़िलबदी शैर यानी (आशु कविता) कहने की ज़बरदस्त रिवायत रही है। जबकि आज की प्रगतिशील शायरी में इस तरफ़ शायरों का रूझान बहुत कम है।

भोपाल के एक मशहूर शायर स्व. वकील भोपाली इस फ़न में माहिर थे। उनकी प्रतिभा का कमाल चारबैत के कई कार्यक्रमों में मिलता है, जिसकी चर्चा अक्सर चारबैत के आयोजनों के बीच होती है।

चारबैत के बीच जोड़े लगाने की प्रथा है। जैसे किसी पार्टी ने कोई चारबैत आरंभ की उसी रदीफ़ क़ाफ़िये पर प्रतियोगी पार्टी अपना गायन शुरू करती है, उसे जोड़ा लगाना कहते हैं और इस प्रकार एक पार्टी एक बन्द और दूसरी पार्टी दूसरा बंद गाती है। जिसके कारण दर्शक श्रोताओं में एक प्रकार का उत्साह और रूचि पैदा होती है। कुछ वर्षों से देखने में आ रहा है कि इस कला के प्रति आम जनता की रूचि कम होती जा रही है। इसका कारण यह भी हो सकता है कि वर्तमान में फ़िल्मी संगीत के माध्यम से पश्चिमी संगीत का चलन अधिक गति से बढ़ा चला जा रहा है। इस ऐतिहासिक कला को स्थापित करने और जीवित रखने में सरकार और निजी संस्थाओं को आगे आकर इसके विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाना चाहिए।

मध्यप्रदेश आदिवासी लोक कला परिषद् भोपाल का इस कला को जीवित रखने में एक महत्वपूर्ण योगदान रहा है। परिषद् ने इस विलुप्त होती कला का दस्तावेज़ीकरण कर उसे बचाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है।

अक्सर देखने में आया है कि क़व्वाली, ग़ज़ल और मुशायरे के लिए अनेक संस्थाएँ सहायता प्रदान करती रहती हैं, किन्तु चारबैत के आयोजनों में बहुत कम ही है।

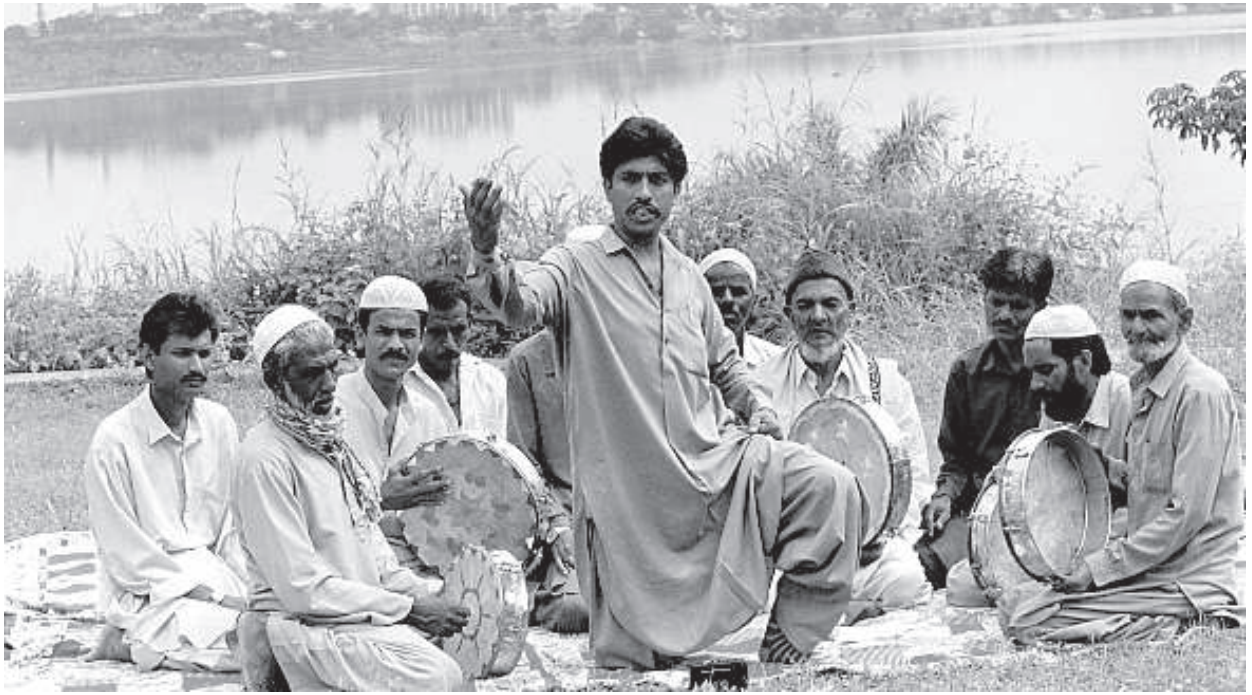

चारबैत में गायी जाने वाली विभिन्न प्रकार की शायरी

उर्दू हिन्दुस्तान की ज़बानों में एक महत्वपूर्ण और शक्तिशाली ज़बान रही है जो अपने लबो लहजे और मिठास के कारण पसंद की जाती है। इस ज़बान की अपनी एक संस्कृति और अपनी एक अज़ीमोशान रिवायत इस देश के हर क्षेत्र में रही है। हिन्दुस्तान की और दूसरी ज़बानों की तरह भोपाल में भी इस ज़बान को फलने-फूलने के पूरे अवसर प्राप्त हुए हैं। इस ज़बान के विकास में शैरो -शायरी की मिठास के कारण इस ज़बान ने भरपूर तरक्की की मन्ज़िलें तय कीं। आज भी और पहले भी इस ज़बान के शायरों ने शायरी के माध्यम से देश की तरक़्क़ी एकता, भाई चारा, आपसी मेल मिलाप और सारी इन्सानियत को मोहब्बत और अमन का पैग़ाम दिया है। शायरी में विभिन्न प्रकार की चीज़ें कही जाती हैं। इस सिन्फ़े सुख़न में ग़ज़ल, नज़्म, क़तआत, रूबाईयात, क़सीदा, मसनवी, मरसिया, क़व्वाली और चारबैत भी लिखी जाती है।

चारबैत भी शायरी की एक बेहतरीन सिन्फ़ पूर्व में रही है। इसलिए कि पूर्व में चारबैत कला को किसी न किसी प्रकार का संरक्षण प्राप्त था। वर्तमान में इस कला के जानने वाले कम हैं और यह दुर्लभ होती जा रही है।

चारबैत की शायरी में नातपाक, इश्क़िया, मज़ाहिया, बरसात, त्यौहार, सावन, चौमासा, बारहमासा आदि कलाम गाया जाता है। ग्रामीण भाषा में भी चारबैत गायी जाती है। किन्तु चारबैत गायकी का आरंभ नातपाक से किया जाता है। सदैव से

यह परम्परा चली आ रही है कि चारबैत कार्यक्रम का आरंभ नातपाक़ से हो। चारबैत में जो शायरी गायी जाती है। उसमें कविता को विभिन्न प्रकार से जैसे सवाई, दो बन्दी, चौबन्दी, पाँच बन्दी और छः बन्दी आदि कहते हैं।

चारबैत शायरी का उर्दू में एक बेपनाह ख़ज़ाना आज भी मौज़ूद है, जिसके प्रकाशन के लिए कोई कोशिश नहीं की गई। इस छुपे हुए ख़ज़ाने को यदि प्रकाशित करवा दिया जाये तो उर्दू अदब में बेपनाह इसको इज़्ज़त और क़दर की निगाह से देखा जायेगा। इसके अतिरिक्त चारबैत को अदब की तारीख कभी फ़रामोश नहीं कर सकेगी। हमारी नई नस्ल भी आइन्दा इस कला को समझने और जानने में रूचि लेगी। वर्तमान में केवल चारबैत पार्टियों के पास डायरियों में चारबैत सीमित और क़ैद है।

चारबैत में जो शायरी गायी जाती है, उसे विभिन्न प्रकार से पुकारा जाता है, और उसमें बहुत से रंग (चारबैत की क़िस्म) होते हैं। यहाँ चारबैत शायरी के विभिन्न प्रकार के रंग, नमूने आदि प्रस्तुत हैं। अधिकतर चारबैतें चौबन्दी लिखी गई हैं।

हम्द

हम्दे ख़ालिक़[1] में जो बन्दा सहरोशाम रहा
तुझसे मेहफ़ूज़ वह ऐ गर्दिशे[2] अय्याम रहा

बे सुतूँ तूने फ़लक[3] को किया ख़ालिक़ क़ायम
सब फ़ना[4] होंगे तेरी ज़ात रहेगी दायम[5]
ज़ात शिरकत से बरी तेरी ख़ुदाऐ आलम
तेरा अलताफ़ो करम बन्दो पे हरगाम रहा

तूने दी चाँद से सूरज से फ़लक को इज़्ज़त
और सय्यारों[6] से फिर उसकी बढ़ाई ज़ीनत
हे नुमायाँ तेरी हरशै में ईलाही[7] कुदरत
फ़ैज़े नेअमत तेरे बन्दों पे सुबोहशाम रहा

सब की बिगड़ी तू बनाता है ख़ुदा वन्दकरीम
पार बेड़ा तू लगाता है ख़ुदा वन्दकरीम
रन्जो ग़म तू ही मिटाता है ख़ुदा वन्दकरीम
तेरा हर हाल में हम बन्दों पे इनआम रहा

यही ख़ालिक़ से अज़ीज़ अपनी दुआ है हरदम
पास यारों के न आऐ कभी अन्दोह[8] अलम
शक़[9] जिगर दुशमने बदख़्वाह[10] का हो मिस्ले क़लम
हम को रूसवाऐ[11] ज़माना से न कुछ काम रहा।

कलाम-अज़ीज़

1. ईश्वर, 2. दिन रात घूमना, 3. आकाश, 4. मिटना, 5. सदैव, 6. नक्षत्र, 7. ईश्वर, 8. दु:ख दर्द, 9. फटना, 10. बुरी चाहत, 11. बदनाम

नातपाक

हुस्ने बेमिसाल हुज़ूरे शहे वाला होगा
नूर ही नूर से मआमूर [1] सरापा होगा

आपके सामने मेहशर [6] में वह जलवा होगा
तूर पर ह़ज़रते मूसा ने जो देखा होगा
रब से बेपर्दह मुलाक़ात का मौक़ा होगा
वादा बख़शिश का जो ़फ़र्माया वह पूरा होगा

अलअमाँ [3] अलअमाँ जिस रो़ज़ क़यामत होगी
जितनी मख़लूक़ है सब पर बड़ी आ़फ़त होगी
कोई पुरसाँ [4] नहीं होगा अजब हालत होगी
अपनी उम्मत पे मगर आपका साया होगा

ये पहाड़ और न ये दश्तो [5] बियाबाँ होंगे
लहलहाते न ये शादाब गुलिस्ताँ होंगे
ये चरिन्द और परिन्द ओर न इन्साँ होंगे
हुक्मे ख़ालिक़ से ये आलम तहोबाला [6] होगा

हश्र [7] के दिन ये यक़ी है के श़फ़ाअत [8] होगी
आपकी ज़ाहिरे आसी पे इनायत होगी
तिशनगी [9] से अगर उसकी बुरी हालत होगी
हो़ज़ेकौसर का उसे जाम पिलाया होगा

कलाम-मोहम्मद अज़हर 'ज़ाहिर' भोपाली

1. भरा हुआ, 2. कयामत का दिन, 3. ईश्वर की पनाह, 4. पूछने वाला, 5. जंगल, 6. मिट जाना, 7.कयामत, 8. माफ़ करना, 9. प्यास

सवाई

क्यों रश्कपरी दश्त में दिन रात फिराया
दीवाना समझकर

क्यों शम्मे सिफ़त मुझको सरे बज़्म जलाया
परवाना समझकर

कुछ क़द्र नकी तूने मोहब्बत की सितमगर
ये मेरा मुक़द्दर

हँस हँस के ख़ते शौक़ रक़ीबों [1] को सुनाया
अफ़साना समझकर

पहले तो लिया शौक़ से मेरा दिले शेदा [2]
समझा था खिलौना

फिर संग से कुचला उसे कुछ रहम न आया
पैमाना समझकर

अग़ायार [3] यगाने [4] थे के थे ज़ीनते मेहफ़िल
मसरूर थे खुशदिल

अफ़सोस मुझे बज़्म से बे महर उठाया
बैगाना समझकर

पामाल [5] किया तूने दिलेज़ार [6] को ज़ालिम
ये ज़ुल्म था लाज़िम

फ़ुरक़त [7] में तेरी सब्र ने तुरबत [8] को बसाया
ग़मख़ाना समझकर

कलाम-सब्र उस्ताद

1. दुश्मन, 2. किसी पर दिल का आना, 3. दुश्मन, 4. बेमतलब, 5. मिटाया, 6. दुखी, मन, 7. जुदाई, 8. क़ब्र

दोबन्दी

मुखड़े के बलहारी में तो तोरे शाहेज़मन [1]
अखयन हैं तोरी प्यारी दीद की है मुझको लगन

हिज्र [2] में तेरे मियाँ होश है मुझको कहाँ
करती हूँ में ज़ारी दिल को है ये रन्जोमुहन [3]

इश्क़ की आतिश तेरी दिल में है मेरे लगी
जल गई में सारी फुक गया सब तनबदन

ये तेरा तीरे नज़र कर गया दिल में असर
ज़ख़्म लगा कारी क्या करूँ इसका जतन

ऐ मेरे माहे अरब कीजिये मुझको तलब
हिन्द में हूँ आरी [4] अपना दिखा दीजे वतन

तेरा मुझे दिलरूबा मिलता नहीं कुछ पता
ढूँढू जगत सारी देखे हैं सब जंगलो बन

हिज्र में है बेकली उसके गुलामे अली
अश्क हुऐ जारी हैं वो कहाँ गुनचा [5] दहन

कलाम-गुलाम अली

1.समय का सम्राट, 2. जुदाई, 3.बहुत अधिक ग़म, 4. ख़ाली, 5. अध खिला फूल

चौबन्दी

दोनों जहान तेरी मोहब्बत में हार के
वह जा रहा है कोई शबेग़म गुज़ार के

कैफ़ो निशातो [1] ऐश के मन्ज़र उदास हैं
फ़ीकी है चाँदनी महो अख़तर [2] उदास हैं
वीराँ है मयकदा ख़ुमोसाग़र [3] उदास हैं
तुम क्या गऐ के रूठ गऐ दिन बहार के

जन्नत में हमको चाह मिली वह भी चार दिन
दुनिया में जो पनाह मिली वह भी चार दिन
इक फ़ुरसते गुनाह मिली वह भी चार दिन
देखे हैं हमने होस्ले परवर दिगार के

मुझको ग़मे हयात ने दीवाना कर दिया
हुस्नो अदाऐ नाज़ से अनजाना कर दिया
दुनिया ने तेरी याद से बेगाना कर दिया
तुझसे भी दिल फ़रेब हैं ग़म रोज़गार के

हमराह हाशमी के मिले थे वह आज फ़ैज़ [4]
हाथों में अपने जाम लिए थे वह आज फ़ैज़
भूले से मुस्कुरा तो दिये थे वह आज फ़ैज़
मत पूछ वलवले [5] दिले नाकर्दाकार [6] के

कलाम-फ़ैज़ अहमद फ़ैज़/बन्द मसऊद हाशमी

1. आराम के दिन, 2.चाँद सितारे, 3. शराब के प्याले, 4. फ़ैज़ अहमद फ़ैज़, 5. होसले, 6. बे गुनाह

पाँच बन्दी

हर घड़ी हर लहज़ा [1] यार सीने से बाहम [2] रहे–दिल पे न कुछ ग़म रहे

फूला फला बाग हो और गुल चमन चमन–गुनचओ गुल ख़नदहन [3]
फूली हो कली कली शाख़ों पे हो बाँकपन–झूमे गुलेयासमन
गायें बर्ग बर्ग पर बुलबुलें नग़में हज़ार–हर घड़ी हर लहज़ायार [5]
हाथ में हर राग का जिसके तालोसुम [5] रहे–सीने से बाहम रहे
लिखने को अंगुशतेग़ैब [6], ग़ैब से क़लम रहे–दिल पे न कुछ ग़म रहे

सहने चमन में जो हो तो ऐक ही मकाँ भी हो–आबेजू [7] रवाँ [8] भी हो
फ़र्श चान्दनी का हो रात का समाँ भी हो–माह और कुताँ [9] भी हो
बज़्म की आराईशें [10] करता हो वह गुलअज़ार [11]–हर घड़ी हर लहज़ा यार
चहके ख़ुश आहंग [12] जब मुर्ग़े सहर थम रहे–सीने से बाहम रहे
सुबह तलक ऐश हो यार का करम रहे–दिल पे न कुछ ग़म रहे

दिन कटे गुलगश्त [13] में शब को सेर माह हो–महर की निगाह हो
सूरतो व सीरत पे खूब तेरी वाह वाह हो–ग़ैर को न राह हो
चाँद से दो चन्द हो हुस्न की तेरे बहार–हर घड़ी हर लहज़ा यार
रोनक़े गुलज़ार भी तुझसे सदा कम रहे–सीने से बाहम रहे
साग़रे इशरत [14] तेरा रश्के [15] जामे जम [16] रहे–दिल पे न कुछ ग़म रहे

अलग़र्ज़ [17] उस रंग से वस्ल [18] हो तेरा मुदाम–ऐश रहे सुब्होशाम
बोसे हों तसकीन के लब पे रहे दौरे जाम–हो नशा मस्ती के नाम
लिपटे गले से मेरे आके वह गुल बार बार–हर घड़ी हर लहज़ा यार
दीदऐबद [19] शक्ल ख़ाक पस्तऐ क़दम रहे–सीने से बाहम रहे
मरज़ी पे बैताब की राज़ी वह सनम रहे–दिल पे न कुछ ग़म रहे

कलाम–बेताब

1. हर समय, 2. मिलना, 3. धीरे से हँसना, 4. हर समय, 5. ताल राग का मिलना, 6. ईश्वर की कृपा, 7. मीठा पानी, 8. बहना, 9. नक़ाब, 10. सजावट, 11. फूल सा नाज़ुक, 12. अच्छी आवाज़, 13. बाग़, 14. ख़ुशी का जाम, 15. हसद, 16. जमशेद जिसने पहला जाम बनाया, 17. सारांश, 18. मिलाप, 19. बुरी नज़र

होली

जलाएँ आओ अदावत [1] को मिल के होली में
बढ़ाऐं लुत्फ़ो इनायत को मिलके होली में

जहाँ में आम करें प्यार के ज़फ़साने को
प्यामें अमन सुनाएँ चलो ज़माने को
लुटाएँ राहतो आराम के ख़ज़ाने को
मनाएँ जश्ने [2] मसर्रत को मिलके होली में

हो जिसमें ज़फ़ाएदा भारत का ऐसा काम करें
ये बात कहने की है आओ चलके सबसे कहें
विक़ारे [3] मुल्क बढ़ाना है एकता से हमें
खुलूसे दिल से मोहब्बत को मिलके होली में

बुराईयों को लगाएँ खुशी से हम ठोकर
यही अब अपने लिए है हयात से बहतर
बदी को झोंक दें अब आग में हवा देकर
मिटाएँ दिल से कदूरत [4] को मिलके होली में

वकील देखे ज़माना हमें मोहब्बत से
तअल्लुक़ात [5] की अच्छाईयों से चाहत से
करें किसी को न मेहरूम हम मसर्रत से
ढ़केलें बढ़के अदावत को मिलके होली में

कलाम-वकील भोपाली

1. दुश्मनी, 2. ख़ुशी की मेहफ़िल, 3. देश का गौरव, 4. घृणा, 5. संबंध

बरसात

सावन की घटा चारों तरफ छाई हुई है
बरसात का मौसम है बहार आयी हुई है

आलम में नज़र आती है क्या कुदरते बारी
अल्लाह की रहमत है यहाँ अब्र से जारी
अठखेलियाँ करती हैं कहीं बादे बहारी
और बादे सबा नाज़ से इतराई हुई है

ऐहबाब [1] बजाते हैं कहीं चंग [2] चगाने
कोयल की कहीं कूक है बुलबुल के तराने
ताउस लगा बाग़ में यूँ नाचने गाने
गुलशन में कोई जैसे परी आयी हुई है

बरसात के मौसम का ज़माना है सना [3] ख़्वां
जंगल में नज़र आता है लुत्फ़े गुले रेहाँ [4]
क्या मय की क़सम खाँऊ में ऐ वाइज़े [5] नादाँ
मयखाने में तौबा की क़सम खाई हुई है

शमशीरे [6] जंग इस तरह चमक जाती है बिजली
गोया किसी तोबा को जला जाती है बिजली
हर लख़्त [7] इशारों से ये फ़रमाती है बिजली
ऐ मयकशों आओ कि बहार आयी हुई है

1. मित्र, 2. एक प्रकार का बाजा, 3. अच्छाई का गाना, 4. एक प्रकार का फूल, 5. नसीहत करने वाला, 6. तलवार, 7. हर बार

हास्य

लहराके झूम, झूम के ला, मुस्कुरा के ला
फूलों के रस में चाँद की किरनें मिला के ला

हर ज़र्रा गुलअ़ज़ार है, हर चहरा माहजबीं
पीरेमुग़ाँ [1] से पूछिये जन्नत है ये ज़मीं
कहते हैं उम्रे रफ़ता [2] कभी लौटती नहीं
जा मयकदे से मेरी जवानी उठा के ला

मयख़्वार [3] मयकदे में हसीनो जमील हैं
साक़ी [4] हयाते नो की यही तो दलील हैं
मेहसूस हो रहा है सितारे अलील हैं
उनको भी एक घूँट कहीं से पिलाके ला

छाई है आज काली घटा आसमान पर
दिल मुजतरिब [5] है साक़या कुछ इन्तेज़ाम कर
साग़र शिकन [6] है शैख़े बलानोश [7] की नज़र
शीशे को ज़ेरे दामने [8] रंगीं छुपा के ला

ये बैखुदी का दौर है न मयकशी की लहर
कब तक रहेगी हाशमी तिशना [9] लबी की लहर
देखी नहीं है तूने अभी ज़िन्दगी की लहर
अच्छा तो जा अदम [10] की सुराही उठाके ला

कलाम- अदम लाहोरी/बन्द-मसऊद हाशमी

1. पुराना शराबी, 2. गुज़री हुई उम्र, 3. शराबी, 4. शराब पिलाने वाला, 5. बेचैन, 6. शराब के प्याले को तोड़ने वाला, 7. बहुत पीना, 8. रंगीन परदे के नीचे, 9. होंठों की प्यास, 10. दूसरा संसार

चौमासा

बरसात के मौसम में जुदा हो गया प्यारा
सखी श्याम हमारा

1. *मैं क्या करूँ सखीरी शुरू हो गया असाढ़*
हुआ दिल मेरा बीमार
जिस वक़्त पपीहे ने पिया कह के पुकारा
सखी श्याम हमारा

2. *दूसरे सरपे आ गया सावन का महीना*
मुश्किल हुआ जीना
चुन्दरी में रंगूँ किस तरह घर में नहीं प्यारा
सखी श्याम हमारा

3. *और तीसरे बहारों की बड़ी रेन अँधेरी*
पी बिन हूँ अकेली
सैययाँ नहीं अब घर में करूँ कैसे गुज़ारा
सखी श्याम हमारा

4. *और चौथा महीना सखीरी कुँवार का आया*
पिया ने मुँह न दिखाया
गर्दिश[1] में गया मेरे नसीबों का सितारा
सखी श्याम हमारा

1. घूमना

5. कार्तिक के महीने में पिया घर नहीं आऐ
सौतन ने लुभाये
इन्साफ़ करो पी बिना हो कैसे गुज़ारा
सखी श्याम हमारा

6. आया अगन दिन तो कटे ग़म की बुरी रात
कहूँ किस से जी की बात
इस दिल से निकलता है मेरे आह का नारा
सखी श्याम हमारा

7. इस पौष के जाड़े ने किया है मुझे बेचैन
खड़ी रोती हूँ दिन रेन
कोई तुम में से पी को मेरे बुलवाओ ख़ुदारा
सखी श्याम हमारा

8. माघ के महीने में पिया घर को जो आये
मुझे छाती से लगाये
मेरे नहीं घर ऐरी सखी श्याम दुलारा
सखी श्याम हमारा

9. फागुन के महीने में सभी करते हैं अस्नान
मुझे है यही अरमान
कोयल की तरह पी की हमें याद ने मारा
सखी श्याम हमारा

10. अब चैत ने बेचैन किया है मुझे दिलदार
हुँ ज़ीस्त से बेज़ार
फ़ुरक़त [1] में तेरी चलता है दिल पर मेरे आरा
सखी श्याम हमारा

1. जुदाई

11. अल्लाह मुझे बैसाख की गर्मी से बचाले
हिरन होते हैं काले
लू चलती है और पिया परदेस सिधारा
सखी श्याम हमारा

12. या शैरे ख़ुदा [1] तुम ही से है अब मेरी फ़रयाद
कहता है करीम दाद
मअए जेठ के होते हैं महीने सदा बारा
सखी श्याम हमारा

कलाम- करीम दाद

1. हज़रत अली

बारामासा

फ़सले बहार आयी सुन ऐ सखी
दर्द की कुछ मेरे दवा कीजिये

1. *आया जो आसाढ़ लिखूँ तुझको में क्या*
   छा गई दिल पर मेरे ग़म की घटा
   बरसे है मेंह और चमके है बिजली
   अश्क से तूफ़ान बपा कीजिये

2. *आके सावन ने जो मचाया है शोर*
   खड़के बदरा कह सुन बरखा का ज़ोर
   रेन अंधेरी में ये लरज़े है मेरा जी
   काँपे है बस ख़ौफे ख़ुदा कीजिये

3. *खूब ये भादों ने सताया मुझे*
   फ़ुरक़ते [1] जानाँ में रूलाया मुझे
   आँखों से भी अश्कों की झड़ी
   थमती नहीं रहम ज़रा कीजिये

4. *आ गया ऐ जाने मन अब तो कुँआर*
   याद हैं सब मुझ को तेरे क़ौलो क़रार [2]
   उज़्र [3] था बरसात का प्यारे क़वी
   वादे को अब आ के वफ़ा कीजिये

5. *आया जो कार्तिक का महीना सनम*
   और भी हुआ रंजो अलम
   सेज पड़ी है हायरे सूनी
   कब तलक अब तुझको लिखा कीजिये

1. प्रेमी की जुदाई, 2. क़स्में वादे, 3. मजबूरी

6. *ख़ल्क़ [1] में आया अगन सर्दी हुई*
ग़म से अयाँ चेहरे पे ज़र्दी हुई
मैं शबेफ़ुर्क़त [2] की हूँ ऐसी जली
चमपई पोशाक को अब क्या कीजिये

7. *आया सनम जब के पौष और माह (माघ)*
दिल से निकलने लगी फ़र्यादो आह
किस क़दर है ख़ल्क़ [3] को सर्दी
फुँक गया जी किस से गिला कीजिये

8. *ख़ल्क़ में फागुन की मची धूमधाम*
होली के हंगामे हुए ख़ासो आम
पहने हूँ में पोशाक बसन्ती
कब तलक अब चाके क़बा [4] कीजिये

9. *चैत की आमद हुई सुन ले मेरी जाँ*
इश्क़ ने दिखलाई बहुत गर्मियाँ
सर पर जो आई वह मैंने है सही
आन के दिल मेरा हरा कीजिये

10. *आन के बैसाख ने ऐ साक़िया*
फूँक दिया ख़ाक जला कर किया
दिल पे है अब इश्क़ की गर्मी
वस्ल [5] की मय [6] मुझको अता कीजिये

11. *खूब रूलाया मुझे जेठ ने*
आन के मिसकीन ख़बर अब तो ले
छाओ किस देस में छाई
घर की तो सुध माहे लक़ा कीजिये

कलाम- मिसकीन

1. पैदा होना, 2. जुदाई की रात, 3. मानस, 4. कपड़े फाड़ना, 5. मिलाप, 6. मदिरा। नोट - एक बन्द अप्राप्त है!

ग्रामीण भाषा हिन्दी

दो बन्दी

चल खेलें कन्हैया से मिल-जुलके सखी होरी
नयना से मिलें नयना डोरी से मिले डोरी

जालिम हो बड़े बलमा है बहुत कड़ा ज्यौरा
है-है मुझे क्यों पकड़ा करती थी हवा खोरी

पहले तो मुझे पटका फिर ढ़ब पे चढ़ा लाया
कि एक तो खुद चोरी फिर उसपे सीना जोरी

जाने दे मोरे बल्मा बहते हैं मोरे आँसू
कर मोसे न बैसर्मी अच्छी नहीं ये खोरी

मैं जानती हूँ तुमको उस्ताद बड़े तुम हो
मिन्नत में कँरू तोरी अब लाज रखो मोरी

ऐ असग़र अली देखो पैययाँ में पड़ूँ छोड़ो
वोह भोर लगी होने लो रैन रही थोड़ी

कलाम- जनाब असग़र अली

कुदरत की आन वाले रहमत की शान वाले
तुझ पर जहाँ तसद्दुक़[1] ओ पाक जान वाले

जन्नत में हूरो ग़िलमा[2] ख़ुशियाँ मना रहे थे
झुक झुक के सब फ़रिश्ते आँखें बिछा रहे थे
हज़रत खुदा से मिलने इस तरह जा रहे थे
परदे उठे हुए थे सब दरमियान वाले

कहते हैं जिसको शौकत है मुठ्ठियों में तेरी
कोनों[3] मकाँ की दौलत है मुठ्ठियों में तेरी
दोनों जहाँ की दौलत है मुठ्ठियों में तेरी
बोसीदा[4] कपड़ों वाले टूटे मकान वाले

बख़शिश का है ज़रिया माकूल या मोहम्मद
तुझ पर लुटा रहे हैं यह फूल या मोहम्मद
तेरी ही नात में हैं मशगूल या मोहम्मद
सारे ज़मीन वाले कुल आसमान वाले

मुसलिम का मुद्दुआ[5] तू जाकर यह अर्ज़ कर दे
हज्जन की इलतिजा तू जाकर यह अर्ज़ कर दे
रोज़े पे ऐ सबा तू जाकर यह अर्ज़ कर दे
महजूर[6] कब तक आख़िर हिन्दोस्तान वाले

कलाम–जनाब हज्जन भोपाली

1. कुरबान, 2. ग़ुलाम, 3. दोनों संसार, 4. फटा हुआ, 5. मक़सद, 6. ग़म से दुखी

शबे वादा वह अब तक आ रहे हैं
सितारे हैं के डूबे जा रहे हैं

तग़ाफ़ुल [1] है कि दस्तूरे वफ़ा है
भला ताख़ीर [2] की भी इन्तेहा है
मरीज़े ग़म में बाक़ी क्या रहा है
वह अब तकलीफ़ क्यों फरमा रहे हैं

कहाँ तक यह सितम कोई तवज्जह
यह कह बैठे थे हम कोई तवज्जह
कोई हम करम कोई तवज्जह
अजब अन्दाज़ से शरमा रहे हैं

तजल्ली [3] रेज रूख़सारों पे गैसू
जलाल [4] अंगेज़ रूख़सारों पे गैसू
इताब [5] आमेज़ रूख़सारों पे गैसू
हवाओं से उलझते जा रहे हैं

बहुत मुमकिन है यह रूत रंग लाये
कोई हीला न हज्जन काम आये
मुझे डर है न तोबा टूट जाये
कि बादल फिर मुझे बहका रहे हैं

कलाम-जनाब हज्जन भोपाली

1. नज़र फेर लेना, 2. देर, 3. रोशनी से भरपूर, 4. तमतमाते गाल, 5. क्रोधावस्था,

दुनिया रूख़े मेहबूब पे ललचाई हुई है
क्या हुस्न के गुलशन में बहार आई हुई है

मरता है तेरे हुस्न पे ऐ यार ज़माना
हर घर में शबोरोज़ है तेरा ही फ़साना
हर क़ल्ब [1] तेरे तीरे नज़र का है निशाना
हर आशिक़े मुज़्तर [2] की क़ज़ा आई हुई है

रफ़्तारे क़यामत है तो क़द फ़ितनऐ [3] महशर
पलकें तेरी नशतर हैं तो अबरू तेरे ख़ंजर
नज़रें तेरी तलवार हैं या तेग़े [4] सितमगर
हे ज़ुल्फ़ेबला सर जो तेरे आई हुई है

चहरा तेरा ज़ुल्फ़ों में नुमायाँ है यह दिलबर
या अब्र से निकला है अभी माहे मुनव्वर
या छाई है हल्की सी घटा चाँद के ऊपर
या शाम से मिलने को सहर आई हुई है

गुलज़ार मोहब्बत के हैं सब तेरे ही दम से
सरसब्ज़ हैं सययद तेरे अलताफ़े करम से
रोशन हैं जहाँ तेरे ही अनवारे क़दम से
हर बाग़ में इक ताज़ा बहार आई हुई है

कलाम-जनाब सैय्यद भोपाली

1. हृदय 2. बैचेन, 3. कयामत का काल, 4. तलवार

किस शौक़ किस मतानत [1] किस दर्जा सादगी से
हम आपकी शिकायत करते हैं आप ही से

आशिक़ की उस हँसी ने सब बख़्श दीं ख़ताएँ
आतीं हैं मेरे लब तक दिल से बहुत दुआएँ
हुस्ने शगुफ़्ता [2] रू की अल्लाहरे अदाएँ
नज़रे भी हैं मुझी पर पर्दा भी है मुझी से

रूख़ से नक़ाब उठाकर फिर आशकार [3] हो जा
जल्वा मुझे दिखादे फिर आशकार हो जा
ऐ मेरे माहे कामिल फिर आशकार हो जा
उक्ता गई तबियत तारों की रोशनी से

अब आओ हमनवाओं और खाएँ मिलके क़समें
है ज़िन्दगी इसी में है ज़िन्दगी इसी में
नाला कशों उठाओ आहो फ़ुग़ाँ [4] की रस्में
दो दिन की ज़िन्दगी है काटो हँसी ख़ुशी से

दिल ग़म से जल रहा है होंठों पे है तबस्सुम
अपने हनीफ़ अब तक होठों पे है तबस्सुम
दामन है टुकड़े-टुकड़े होठों पे है तबस्सुम
एक दर्स [5] ले रहा हूँ फूलों की ज़िन्दगी से

कलाम-शकील बदायूँनी/जनाब हनीफ भोपाली

1. झुकना, 2. फूल सी खूबसूरती, 3. सामने आना, 4. रोना, 5. सबक़

या ईलाही ये क्या इन्क़िलाब आ गया
कोई उजड़ा किसी पर शबाब आ गया

रोशनी हर सितारे की रोने लगी
चाँद की चाँदनी जान खोने लगी
सब चिराग़ों की लो ज़र्द [1] होने लगी
कोई महफ़िल में जब बे नक़ाब आ गया

उनकी महफ़िल में पहुँचे जो एक रोज़ हम
हुस्न के रौब से डगमगा ये क़दम
देखकर हमको ये ग़ुलमचा [2] एकदम
क्या कोई रिन्द [3] पीकर शराब आ गया

दुश्मनों की भी आज ज़िद पूरी हुई
जिसका ख़तरा था वह बात भी हो गई
लीजिये लाश क़ासिद [4] की भी आ गई
लो मुबारक हो ख़त का जवाब आ गया

कलाम-हामिद साहब, चाँदपुर (उत्तरप्रदेश)

1. पीली, 2. शोर, 3. शराबी, 4. पत्र लाने वाला

मौसम है बहारों का बरसता हुआ सावन
ऐसे में पिया से है सखीरी मेरी अनबन

भेजी कोई चिट्ठी न मिली कोई खबरया
आजा के तेरे दर्स [1] की प्यासी है नजरया
ढूँढू तो कहाँ ढूँढू तुझे मेरे सँवरया
देखूँ जो छबि अपनी तो डसता है ये दर्पन

हर बात समझते नहीं हैं अक़्ल के छोटे
ज़ाहिर में खरे और वह बातिन [2] में हैं खोटे
ऐ मेरी सखी दिल पै मेरे साँप से लोटे
कल रात पड़ोसन का जो कंगना हुआ खन-खन

साजनसी कहीं और मोहब्बत नहीं मिलती
मयके में भी सुसराल सी दौलत नहीं मिलती
दिन में तो उन्हें काम से फ़ुरसत नहीं मिलती
रातों को जगाती हूँ तो करते हैं वह तनफ़न

लगता है ये दुनियाँ है फ़क़त नाम की दुनियाँ
जैसे के कहीं खो गई आराम की दुनियाँ
मुतरिब [3] वह नहीं पास तो किस काम की दुनियाँ
बिन उनके अधूरी सी है पायल की ये खन-खन

कलाम-जनाब मुतरिब भोपाली

1. दर्शन, 2. भीतर मन, 3. गाने वाला

दो बन्दी

जिसने मोरा मन लिया वही अनोखा लाला है

जिन्नों [1] परी ख़ासोआम [2] कहते हैं यह सब तमाम
इश्क़ की लगाके आग बनता भोला भाला है

मानोरी मानो सखी खेलोना मोसे होली
पी को क्या दूँगी जवाब रंग जो तूने डाला है

सुर्ख़ लब ग़ुन्चादहन [3] सर्वक़द सीमी [4] बदन
सुरमे की तुरफ़ा फ़वन [5] मुखड़ा भोला भाला है

बाग़ में करके सिंगार गुल ये कहे बार-बार
रहना तुम सब बा अदब ग़ालिब आने वाला है

कलाम-मिर्ज़ा ग़ालिब

1. जिन परी, 2. बड़े छोटे लोग, 3. फूल से होंठ, 4. ऊँचा क़द, 5. महक

अनोखी वज़ा [1] है सारे ज़माने से निराले हैं
ये आशिक़ कौन सी बस्ती के यारब रहने वाले हैं

बड़ा दुश्मन है यह चरख़े [2] कोहन मेरी उम्मीदों का
ना उजड़े या इलाही यह वतन मेरी उम्मीदों का
फला फूला रहे या रब चमन मेरी उम्मीदों का
जिगर का खून दे- देकर यह बूटे मैंने पाले हैं

कोई सूरत नज़र आती नहीं अब शाद रहने की
भला फिर क्या मुझे उम्मीद हो आबाद रहने की
न पूछो मुझसे लज़्ज़त [3] ख़ानमा बरबाद रहने की
नशेमन सैकड़ों मैंने बनाकर फूँक डाले हैं

इसी हसरत ने मस्जिद में बिठा रखा है वाईज़ [4] को
इसी धुन ने नमाज़ी भी बना रखा है वाईज़ को
उम्मीदे हूर ने सब कुछ सिखा रखा है वाईज़ को
यह हज़रत देखने में सीधे साधे भोले-भाले हैं

मुझे भाती नहीं हज्जन हँसी फूलों के हारों की
मेरा दिल खुश नहीं करती है रंगीनी बहारों की
रूलाती हैं मुझे रातों को ख़ामोशी सितारों की
निराला इश्क़ है मेरा निराले मेरे नाले हैं

कलाम-अल्लामा इक़बाल

1. सजधज, 2. पुराना आकाश, 3. उजड़ा घर, 4. नेक राह बताने वाला

वोह नज़र उठी तो मयख़ाने बने
दिल मेरा टूटा तो पैमाने बने

सामने आने से भी डरते थे जो
ज़िन्दगी के नाम पर मरते थे जो
कल ज़मी पर रेंगते फिरते थे जो
पर निकल आये तो परवानें बने

खुश्क [1] आँखे दामने [2] तर देख़िये
देख़िये यह आज मंज़र देखिये
मेरे अश्कों का मुक़द्दर देख़िये
शैख़ [3] की तस्बीह के दाने बने

बस यही है इस तराने का जवाब
आईना है इस फ़साने का जवाब
खुद ज़माना है ज़माने का जवाब
बस्तियाँ उजड़ीं तो वीराने बने

यह नई सौग़ात होगी आप में
जलवा रौशन रात होगी आप में
कुछ न कुछ तो बात होगी आप में
यूँ नहीं ये लोग दीवाने बने

कर रहा हूँ ज़िन्दगी यूँ ही बसर
मेरी शाहिद कब किसी पर है नज़र
साथ ग़ैरों ने दिया था ए क़मर
और जो अपने थे बैगाने बने

कलाम-हजरत क़मर जलालाबादी/बंद-शाहिद भोपाली

1. सूखी, 2. भीगा दामन, 3. अल्लाह वाला

आज घबराकर वोह बोले जब सुने नाले [1] मेरे
जान के पीछे पड़े हैं चाहने वाले मेरे

हो गई तैयार जब आहे रसाई [2] के लिए
मुसतइद [3] जब हो गये नाले दोहाई के लिए
महफ़िले दुश्मन में मेरी पैशवाई [4] के लिए
झूमकर आना वोह तेरा हाऐ मतवाले मेरे

इश्क़ में मशहूर तो हो गये चारों तरफ
उड़ गये छींटे हमारे खून के चारों तरफ
जायेगा हदिया [5] रकीबों के लिए चारों तरफ़
मेरे क़ातिल ने किये हैं चार पर काले मेरे

क़ैस ने फ़रहाद ने भी यूँ ना पाई परवरिश
खूने दिल ख़ूने जिगर से उम्र भर की परवरिश
इश्क़ो वेहशत [6] की करेगा कौन ऐसी परवरिश
इनको छोड़ किस तरह ये पड़ गये पाले मेरे

मुझको हज्जन हिज्र [7] में भी यास का आलम नहीं
दोस्त मेरे कम नहीं ऐहबाब मेरे कम नहीं
वोह अयादत [8] को न आये यह दाग़ तो कुछ गम नहीं
और दुनियाँ में बहुत हैं पूछने वाले मेरे

कलाम-दाग देहलवी/बन्द-हज्जन भोपाली

1. दुखी आवाज़, 2. पहुँच, 3. तैयार, 4. अगुआई, 5. तोहफा, 6. दीवानगी, 7. जुदाई, 8. बीमार का हाल पूछना

जोगी का लिया हमने बरन यार की ख़ातिर
अपनाया फ़ीक़ीरी का चलन यार की ख़ातिर

मस्जिद में बने मुल्ला तो मंदिर में पुजारी
दरगाह पे सज्जादा [1] नशीन बन के गुज़ारी
हर नगरी में ढूँढ़ा किया बन-बन के भिखारी
हर एक जतन कर चुका उस यार की ख़ातिर

नाकूस [2] में पाया न उसे बाँग़े अज़ाँ में
मस्जिद में मिला वो न हमें कुऐ [3] बुताँ में
काबे में पता उसका न काशी के मकाँ में
दरदर में भटकता फिरा उस यार की ख़ातिर

पंडित बने हम और कभी बनके ब्राह्मण
मंदिर में बहुत रोज़ बूतों के किये दर्शन
बैठे रहे कुछ रोज़ जमाये हुए आसन
गाये भी कई बार भजन यार की ख़ातिर

इस इश्क़ ने युसुफ़ को भी क़ैदी ही बनाया
और उसने जुलेख़ा को भी बदनाम कराया
इस इश्क़ ने हातिफ़ को भी तनहाई फिराया
लेकिन न मिला कोई सजन यार की ख़ातिर।

कलाम-जनाब हातिफ़ भोपाली

1. दरगाह का प्रबंधक, 2. शंख बजाना, 3. गली

छोड़कर जाता है दुनिया को वो जाने वाला
जा के वापस नहीं आता है वो जाने वाला

ऐशो इशरत का जो सामान किया है तूने
ज़िंदगी के लिए क्या-क्या न किया है तूने
भूल जा उसको जो दुनिया में किया है तूने
साथ में कुछ नहीं ले जायेगा जाने वाला

लज़्ज़ते [1] ऐश में हर बात को तू भूल गया
भूला अपनो को और अहबाब [2] को भी भूल गया
तुझको जाकर जहाँ रहना है वो घर भूल गया
मौत से तुझको नहीं कोई बचाने वाला

साथ तेरे तेरा हर एक अमल जायेगा
अपने आमालों पे उस रोज़ तू पछतायेगा
कोई भी उज़्र तेरा काम नहीं आयेगा
क़ब्र में कोई भी होगा न बचाने वाला

पंजगाना जो नमाज़ों को अदा करता है
हक़ [3] से जो वायदा किया है वो वफ़ा करता है
वास्ते सबके यह इक़बाल हुआ करता है
हे ख़ुदा उममते [4] आसि को बचाने वाला

कलाम-इकबाल हुसैन इक़बाल

1. आराम का स्वाद, 2. दोस्त, 3. ख़ुदा, 4. गुनाहगार प्रजा

इरादे और ही कुछ हैं अज़ीज़ो मौजे [1] बिसमिल के
के अब काफ़ूर [2] है औसान [3] देखो एहले साहिल के

हमारे ज़ब्ते [4] ग़म की इन्तेहा भी देख ली उसने
हमारे अज़्म [5] की तर्ज़े अदा भी देख ली उसने
अचानक सर पे मंडलाती क़ज़ा [6] भी देख ली उसने
वो देखो उड़ गये हाथों से तोते मेरे क़ातिल के

अरे ज़ालिम तुझे अपने किये का सामना होगा
तुझे और तेरे घरवालों को घर से भागना होगा
गरीबों के लहू का कर्ज़ हरसू [7] बाँटना होगा
यह अच्छा था कि तू रहता सभी से खूब हिलमिल के

मिरी हालत पे उसको भी तरस आया है फिर शायद
मेरी आहो फूगाने रंग दिखाया है फिर शायद
उसे मेरी वफ़ा पर ऐतबार आया है फिर शायद
नज़र आते हैं कुछ बारीक परदे आज मेहमिलके

ख़िज़ाँ [8] रूख़सत हुई मौसम बहारों का नज़र आया
अंधेरा छट गया जलवा नज़ारों का नज़र आया
फ़लक पर काफ़ला रोशन सितारों का नज़र आया
हक़ीक़त है ये सब अकरम उजाले हैं मिरे दिल के

कलाम–डॉ. इकराम अकरम

1. ज़ख़्मी लहर, 2. उड़ा हुआ, 3. होश हवास, 4. सहन करना, 5. पुरुषार्थ, 6. मौत, 7. हर जगह, 8. पत झड़

कभी मुझसे दोस्ती है कभी मुझसे दुश्मनी है
तेरी बात दो रूख़ी है तेरी चाल दो रूख़ी है

तुझे मुझसे गर नहीं है मुझे तुझसे है मोहब्बत
तुझे जब कभी मिले जो घड़ी दो घड़ी की फ़ुर्सत
यही आरजू है मेरी यही आख़री है हसरत
कभी आके देख जाना मेरी जान पर बनी है

मैं यह ख़ूब जानता हूँ तू नज़र चुरा रहा है
तेरा वाक़िआ [1] पुराना मेरे लब पे आ रहा है
जिसे तू छुपा रहा है जिसे तू बचा रहा है
उसी मद भरी नज़र से कभी ख़ूब मैंने पी है

उसे लड़खड़ाते देखा उसे डगमगाते देखा
उसे मुसकुराते देखा उसे हँसते रोते देखा
उसे सरझुकाते देखा उसे सर उठाते देखा
ज़रा ज़र्फ़ [2] से ज़्यादा किसी रिन्द [3] ने जो पी है

तेरा नाम ले रहा है मुझे देखकर ज़माना
भला बात क्या थी ऐसी जो बना दिया फ़साना
मेरा हाल पूछने को तेरा बार-बार आना
इसे कहते हैं मोहब्बत यही अस्ल दोस्ती है

मुझे याद आ रहा है तेरी बरहमी का आलम
कभी आके देख ले तू मेरी बेकसी का आलम
तुझे क्या बताऊँ तुझ बिन मेरी ज़िदगी का आलम
कभी ग़मज़दा हँसी है कभी ग़मज़दा खुशी है

कलाम-शाहिद भोपाली/तालिब भोपाली

1. कहानी, 2. पौरूष, 3. शराबी

किसी सूरत से दिल को शाद करना
हमें दुश्मन समझ कर याद करना

चमन है, मय भी है ठन्डी हवा है
फ़लक [1] पर चारसू [2] छाई घटा है
लिपट कर आज सो जाओ मज़ा है
हमारा दिल अगर है शाद करना

बज़ाहिर शक्ल तो है भोली-भाली
नहीं कोई सितम से बात ख़ाली
नहीं फिर चाह दुश्मन से निकाली
मेरा मन्जूर है बरबाद करना

बहुत पछतायेगा देख ओ सितमगर
न फल पायेगा तू ग़ैरों से मिलकर
रहेगा अब न रश्के गैर दिलबर
मुझे इस रंज से आज़ाद करना

असर है यह मेरी आहे रसा का
जिगर थामे हुए वह शौख़ आया
गया ख़ाली न आजिज़ [3] मेरा नाला [4]
मिरे क़ातिल तेरा फ़रयाद करना

कलाम-जनाब आजिज़ भोपाली

1. आकाश, 2. चारों ओर, 3. मजबूर, 4. दुख भरी आवाज़

मुझको जलवा दिखाने में क्या देर है
आग दिल की बुझाने में क्या देर है

तुमको सब कुछ पता हो गया है तो फिर
इश्क़ बेदार सा हो गया है तो फिर
आमना-सामना हो गया है तो फिर
अब वफ़ा आज़माने में क्या देर है

अब न तड़पाओ मुझको मेरे मोहतरम [1]
शम्मे उल्फ़त जलाओ मेरे मोहतरम
मुझको इतना बताओ मेरे मोहतरम
ज़ख़्में दिल गुदगुदाने में क्या देर है

यह दिया है वफ़ा का सिला बज़्म में
फ़ैसला आपका सुन लिया बज़्म में
ग़ैर को तुमने अपना कहा बज़्म में
मुझको अपना बनाने में क्या देर है

देख लें आप शाहिद को गर इक नज़र
हर शबे [2] ग़म की हो जायेगी फिर सहर
ऐ मेरे जाने मन ऐ मेरे हम सफ़र
रूख़ से पर्दा उठाने में क्या देर है

कलाम-जनाब शाहिद भोपाली

1. आदर्णीय, 2. रात

जलवागाहे [1] नाज़ में परवाना ऐसा चाहिए
वह निगाहें ख़ुद कहें दीवाना ऐसा चाहिए

एक क़तरा भी न दे साक़ी अगर कमज़र्फ़ [2] को
देखकर मुँह फेर ले ऐहले नज़र कमज़र्फ़ को
जिसकी ऐरिन्दों न हो कोई ख़बर कमज़र्फ़ को
पीने वाले के लिए पैमाना ऐसा चाहिए

वह करे मजबूर होकर मेरी हालत पे करम
तुझको मेरे ज़ोक़े [3] दिल ज़ोके़ मोहब्बत की क़सम
दास्ताने दिल सुना उनको मेरे हमराज़े ग़म
सुनके वो बेताब हों अफ़साना ऐसा चाहिए

ये इनायत हो तेरी फिर मयकशों [4] के हाल पर
कम से कम हर पीने वाले को रहे उसकी ख़बर
कोई भी कमज़र्फ़ जिसमें आ न पाये उम्रभर
मेरे साथी अब तो एक मयख़ाना ऐसा चाहिए

ज़िन्दगी अपनी गुज़र जाये वकील आराम में
फ़र्क फिर कुछ भी न हो आग़ाज़ और अंजाम में
जो करे तारीफ़ हर लम्हा बज़्में आम में
दुश्मनों से भी हमें याराना ऐसा चाहिए

कलाम-जनाब वकील भोपाली

1. प्रेमी की मेहफ़िल, 2. गिरा हुआ, 3. पसंद, 4. शराबी

नज़र बेवफ़ा ने जो हमसे चुराली
तो महफ़िल में हमने भी शमा जलाली

अगर कम है मय मेरे साक़िऐ [1] मुज़तर
तो फिर बाँट दे सेहबा [2] भर कर बराबर
यह तोहीन है मयकदे की सरासर
इधर जाम ख़ाली उधर जाम ख़ाली

मिली है उन्हें हुस्न की जब से दौलत
चलाते हैं वह अपनी सब पर हुकूमत
वह निकले हैं बनके सरापा क़यामत
है हाथों में मेंहदी तो होठों पे लाली

ख़बर क्या थी हमको न आयेगा दिलबर
कभी घर में हम थे कभी घर के बाहर
शबे वादा जब वह न आया सितमगर
तो तस्वीर उसकी गले से लगाली

करे कोई क्या वस्फ़ [3] तेरे बयाँ का
वहाँ ज़ोर चलता नहीं है जबाँ का
जहाँ ज़िक्र आया तेरे आस्ताँ [4] का
वहीं लाल ने अपनी गर्दन झुकाली

कलाम-उस्ताद लाल मियाँ नज़मी

1. बेक़रार मदुरा पिलाने वाला, 2. शराब, 3. चरित्र, 4. ठिकाना

गुले [1] निशात बारंगे सुख़न [2] नसीब नहीं
वह लुत्फ़े ख़ास बाफ़ेज़ेदहन [3] नसीब नहीं

गुलों से ज़्यादा तेरे गैसूओं की खुशबू है
गुलाबी रंग है आरिज़ [4] का चश्में आहू है
यह तेरी मस्तख़िरामी [5] भी एक जादू है
नसीमे सुबह को यह बाँकपन नसीब नहीं

ज़रा तू खोल मेरी जान अबलबे [6] तर को
ख़ुदारा तोड़ ख़ामोशी की आज गागर को
तरस रहा हूँ तेरी गुफ़्तुगू के सागर को
हूँ तिशना [7] लबके शराबे सुख़न नसीब नहीं

हुजूमें [8] यास में फ़ुरक़त ने मुझको घेरा है
ऐ चारागर [9] तू मेरा हाल पूछता क्या है
मेरे नसीब की गर्दिश नहीं तो फिर क्या है
चमन में रहते बहारे चमन नसीब नहीं

सुनाऊँ लाल मैं किसको यहाँ पे अपनी ग़ज़ल
न खिल सके मेरी उम्मीद के हसीन कँवल
सियाहबख़्त [11] रहा उम्र भर वह ऐ बादल
ज़ियाऐ [12] हुसैन की जिसको किरन नसीब नहीं

कलाम-उस्ताद लाल मियाँ नज़्मी

1. ख़ुशी के फूल, 2. शायरी का रंग, 3. ज़बान से फ़ायदा पहुँचाना, 4. गाल, 5. धीरे चलना, 6. गीले होंठ, 7. प्यासा, 8. दुख की भीड़, 9. हाल पूछने वाला, 10. काली क़िस्मत, 12. हुस्न का नूर

चारबैत शायरी

कोई बनठन कर आता है आने दीजिये
हम से वह आँख़ें लड़ाता है लड़ाने दीजिये

आपने दुनिया में आकर कुछ अभी देखा नहीं
आपको क्या फ़िक्र मुझको तो ज़रा परवा नहीं
ये तरीक़ा खुद उसी के वास्ते अच्छा नहीं
मुज़हेका [1] दुश्मन उड़ाता है उड़ाने दीजिये

मुझसे इक मुद्दत में क़िस्मत ने मिलाया है तुम्हें
मिन्नतों से आज की शब में बुलाया है तुम्हें
चुप हो क्यों क्या बेरहम दुश्मन ने सताया है तुम्हें
वह अगर आँसू बहाता है बहाने दीजिये

आज मेरा वस्ल [2] होना चाहिए या हो विसाल [3]
मेरी उम्मीदों का भी कुछ-कुछ उन्हें भी है ख़्याल
ग़ैर की आज़ादगी का इस क़दर क्यों है मलाल
बज़्म से उठकर वह जाता है तो जाने दीजिये

ऐसी वैसी बात हम सुनते नहीं हातिफ़ कभी
क्या करें हम को पसन्द आती नहीं ये दिल्लगी
रोकते हैं आप क्यों हो जाये दुश्मन की ख़ुशी
सोये फ़ितनों को जगाता है जगाने दीजिये

कलाम-हातिफ़ भोपाली

1. मज़ाक, 2. मिलाप, 3. मृत्यु

ख़ून किस का छुपाये बैठे हो
आज मेंहदी लगाये बैठे हो

हर तरफ़ इज़तेराब [1] जैसा है
दिले बैताब तुम से कहता है
ये क़ियामत नहीं तो फिर क्या है
कब से तुम सर झुकाये बैठे हो

मेरी बातों का तुम करोगे यक़ीं
और पहले से लग रहे हो हसीं
आज क्या है जो पुरशिकन [2] है जबीं
किस पे तैवर चढ़ाये बैठे हो

बात ये भी है तुमने झूठ कही
तुमसे पूरी न होगी उसकी ख़ुशी
क्या बनाओगे क़ब्र आशिक़ की
नक़्शे उलफ़त मिटाये बैठे हो

उनसे कोई गिला न शिकवा हो
चूकते क्यों हो ऐ वकील कहो
ख़ैर इतना तो याद है तुमको
दिल से हमको भुलाये बैठे हो

कलाम-वकील भोपाली

1. बेचैनी, 2. पैशानी की सलवट

मय [1] कौन पिलायेगा पैमाने का क्या होगा
साक़ी न रहेगा तो मयख़ाने का क्या होगा

हंगामें जो बरपा हैं दुनिया की बहारों के
सूरज की तजल्ली [2] के और चाँद सितारों के
बेबाक निगाहों के मस्ताना इशारों के
ये सब जो नहीं होंगे काशाने का क्या होगा

हरचन्द सजायेंगे सब महफ़िलें अरमाँ की
आँखों में बसायेंगे तस्वीर गुलिस्ताँ की
हरगाम [3] लुटायेंगे मस्ती मये इरफ़ा [4] की
लेकिन तेरी फ़ुरक़त [5] में दीवाने का क्या होगा

कुछ दिन का तमाशा है कुछ दिन की जवानी है
चेहरे की ये रंगीनी बस एक कहानी है
इस हुस्न की दुनिया में जो चीज़ है फ़ानी है
उनवान [6] न रहेगा तो अफ़साने का क्या होगा

तहरीर से ऐ अख़तर हर मनज़रे फ़ानी पर
मग़रूर न हो नादाँ तू अपनी ही जवानी पर
तस्वीर नहीं रहती क़ायम कोई पानी पर
जब शम्मा बुझेगी तो परवाने का क्या होगा

कलाम-अख़्तर

1. शराब, 2. तेज, 3. हर क़दम, 4. आत्मिक मदुरा, 5. जुदाई, 6. शीर्षक

मौसम का तक़ाज़ा हे ऐ साक़िये मयख़ाना
रिन्दों को दिये जा तू पैमाने पे पैमाना

कुछ गुन्चों[1] ने समझाया कुछ बादे सबा बहकी
आँखों में निहाँ[2] तेरी तस्वीर मुकम्मल थी
जब मैंने गुलिस्ताँ पर भरपूर नज़र डाली
फूलों ने कहा हँसकर मुझसे तेरा अफ़साना

रिन्दों को नहीं तुझको भी उसकी ज़रूरत थी
ये बात तआज्जुब है क्यों याद नहीं रखी
हमने तुझे बख़्शा था ये मनसबे आली[3] भी
तू भूल गया हमको ऐ साक़िये मयख़ाना

तेरे लिए कुछ कहना मुश्किल है बड़ा मुश्किल
कहते हैं तेरे ज़ख़्मी चिल्लाते हैं यूँ बिस्मिल
हर चाल क़यामत है ऐ शौख़ नज़र क़ातिल
अन्दाज़ निराले हैं रफ़्तार है मस्ताना

परवाने भी जलते हैं अग़यार[4] भी है मरते
लाखों हैं फ़िदा तुझ पर ज़ालिम से कोई पूछे
हैं चाहने वाले तो अरबाबे[5] नज़र तेरे
मसऊद कोई ऐसा है दूसरा दीवाना

कलाम-मसऊद रज़ा

1. फूल, 2. छुपी, 3. ऊँची पदवी, 4. दुश्मन, 5. मित्रगण

क्या कर गया इक जलवए जाना किसी का
रुकता नहीं ज़ंजीर से दीवाना किसी का

आँखें है न दिल उनका है जाँ उनकी हैं न तन
नादानों ने कर रखी है बेकार ये अनबन
आपस में उलझते हैं अबस शेख़ो ब्रह्मन [1]
काबा न किसी का है न बुतख़ाना किसी का

बेताबिये दिल के कई पहलू निकल आये
कुछ भी न रहा ज़ब्त ये क़ाबू निकल आये
बेसाखता [2] आज उनके भी आँसू निकल आये
देखा न गया हाल फ़क़ीराना किसी का

आएगी घटा क्या मेरी मस्ती के मुकाबिल
है होश का पैग़ाम भी मदहोशी का हासिल
यों आम न कर कैफ़े ग़मेइश्क़ को ऐ दिल
कमबख़्त ये मयख़ाना है मयख़ाना किसी का

पलकों पे सितारे कभी देखे नहीं जाते
करते थे वकील आप बड़े ज़ब्त के दावे
उसको भी जिगर देख लिया ख़ाक में मिलते
वह अश्क जो था गोहरेयक [3] दाना किसी का

कलाम-जिगर मुरादाबादी/वकील भोपाली

1. मौलवी/पुजारी, 2. अचानक, 3. हीरा

छलकाएँ लाओ भर के गुलाबी शराब की
तस्वीर खेंचें आज तुम्हारे शबाब की

हसरत की आरज़ू की तमन्ना की ख़्वाब की
दर्दो फ़िराक़ [1] करबो [2] ग़मों इज़तेराब [3] की
ये काली-काली बोतलें हैं जो शराब की
रातें हैं बन्द इनमें तुम्हारे शबाब की

होंठों पे रक़्स [4] करती तबस्सुम की बिजलियाँ
बिखरी हैं रूख़ पे ज़ुलफ़े के छाई हैं बदलियाँ
नाज़ुक कलाईयों में हिना बस्ता [5] मुठ्ठियाँ
शाख़ों में जैसे मुँह बँधी कलियाँ गुलाब की

पुरकैफ़ वादियों में है दिलबर बहारे गुल
कितना हसीन बन गया मंज़र बहारे गुल
वह शामो सुबह सदक़े हो जिन पर बहारे गुल
चुन-चुन के साथ लाये हैं राते शबाब की

रोज़े हिसाब देखेंगें पीने तो दो रियाज़
इक बार हाशमी का कहा मान लो रियाज़
हमसे सियाहकारों को क्यों ख़ौफ़ हो रियाज़
उम्मत में हैं जनाबेरिसालत [6] मआब की

कलाम- रियाज़/बन्द-मसूद हाशमी

1. जुदाई, 2. दर्द, 3. बेचैनी, 4. नृत्य, 5. मेंहदी रची, 6. हज़रत मोहम्मद

उम्रे बरक़ोशरार [1] है दुनियाँ
कितनी बे ऐतबार है दुनियाँ

कोई कमतर है या कोई आली
कोई अलबेला हो या मतवाली
दाग़ से कोई दिल नहीं ख़ाली
क्या कोई लालाज़ार [2] है दुनियाँ

इसकी रंगीनियाँ नहीं देखो
इसकी फ़ितरत [3] को भी जरा समझो
यारबाशी [4] का शौक़ है इसको
यार लोगों की यार है दुनियाँ

मुज़तरिब [5] है निज़ामें शमसोक़मर
किस क़दर तेज़ रू हैं शामो सहर
एक झोंके में है इधर से उधर
चार दिन की बहार है दुनियाँ

कौन जीता है इस जहाँ से अमीर
हाशमी भी गये यहाँ से अमीर
बदतर इसको समझो ख़िज़ाँ से अमीर
देखने को बहार है दुनियाँ

कलाम–अमीर मीनाई

1. बिजली और शोले, 2. मधुबन, 3. चारित्र, 4. मित्रगण, 5. बैचेन, 6. पतझड़

हुस्न हो या हुस्न की रअनाईयाँ
हाथ आ सकती नहीं परछाईयाँ

जो नहीं वाक़िफ़[1] गमों के साज़ से
बेख़बर हैं इश्क़ के अन्दाज़ से
चौंक पड़ते हैं वह ख़्वाबे नाज़ से
चीख़ती हैं जब मेरी तन्हाईयाँ

हो चुकीं अब इश्क़ की राहें तमाम
अब मोहब्बत का नहीं कोई मक़ाम
वो तसव्वुर में रहे मेहवे ख़राम[2]
रूह में बजती रहीं शहनाईयाँ

अब न हुस्नों इश्क़ के वह सिलसिले
हैं न कोई आरजुओं के गिले
देखिये पहले किसे मन्ज़िल मिले
मुझसे आगे हैं मेरी रूसवाईयाँ

हम वफ़ूरे शोक़ में तड़पा किये
हसरतु अरमान से देखा किये
दोनों आलम करवटें बदला किये
और उन्हें आती रहीं अंगड़ाईयाँ

हाशमी चहके चहक कर गिर पड़े
मुस्कुराये और लचक कर गिर पड़े
इश्क़ पर जलवे छलककर गिर पड़े
रह गईं शैरी हिजाब आराईयाँ[4]

कलाम-शैरी भोपाली/बन्द-मसऊद हाशमी

1. जानने वाला, 2. मेहबूब की चाल, 3. शर्म की सजावट

मुझे गुस्सा दिखाया जा रहा है
तबस्सुम को चबाया जा रहा है

कोई देखे अदाये नाज़े दिलबर
ज़फ़ा [1] जू बेमुरव्वत और सितमगर
क़यामत है मेरे रश्के अलम [2] पर
जवाबन मुस्कुराया जा रहा है

निछावर कर दिये लअलोजवाहिर [3]
मोहब्बत में हुए बदनाम आख़िर
दो आलम मैंने छोड़े जिसकी ख़ातिर
वही दामन छुड़ाया जा रहा है

बहुत मैंने कहा छोड़ो तकल्लुफ़
हमारे दरमियाँ क्यों हो तकल्लुफ़
क़रीब आने में है उनको तकल्लुफ़
वहीं से मुस्कुराया जा रहा है

बनेंगे कब तलक अन्जान शैरी
हो गये हैं हाशमी मेहमान शैरी
उन्हें होगा मेरा अरमान शैरी
वह दिन नज़दीक आया जा रहा है

कलाम-शैरी भोपाली/बन्द-मसूद हाशमी

1. ज़ुल्म करने वाला, 2. ग़म, 3. हीरे मोती

पूछना गहराई फिर मुझको उधर जाने तो दो
पार दरया के मेरी कशती उतर जाने तो दो

बोलना आता हो तो फिर बोलना ऐ दोस्तो
मेरी बरबादी पे फिर तुम सोचना ऐ दोस्तो
कैफ़ियत [1] दिल की मेरे फिर पूछना ऐ दोस्तो
पास से उसको मेरे होकर गुज़र जाने तो दो

फिर मेरा इश्क़े जुनूँ रूसवा भी होगा शहर में
जा बजा उनका मेरा क़िस्सा भी होगा शहर में
फिर वफ़ाओं का मेरी चर्चा भी होगा शहर में
पहले मेरे जिस्म के सर को उतर जाने तो दो

फिर समझ लेगा ज़माना इश्क़ के राज़ो नियाज़ [2]
गूँज उठेगी हर एक जानिब से फिर आवाज़े साज़
फिर अयाँ [3] ऐ दोस्तों हो जायेगा उलफ़त का राज़
देखकर तस्वीर मेरी उसको डर जाने तो दो

तिशनगी [4] मेरी मुझे रूलवाये याके अब हँसाये
मेरा साक़ी मुझको शाहिद आज कितना भी मनाये
फिर पियूँगा प्यास मुझको चाहे कितना ही सताये
मयकदे में सबसे पहले जाम भर जाने तो दो

कलाम-शाहिद भोपाली

1. हालत, 2. छुपी बातचीत, 3. जगज़ाहिर, 4. प्यास

अलग होके जाना किनारे किनारे
समझ मैं गया हूँ इशारे तुम्हारे

वह जलवा बुतों का के शाने बुताँ है
जिसे ढूँढ़ते हो वह दिल में निहाँ[1] है
वह मतलूब[2] देरोहरम में कहाँ है
ज़रूरत ही क्या है फिरो मारे-मारे

ये आशिक़ बेचारे फिरें क्यों न ग़मगीं
न मन्दिर में चैन और न काबे में तसकीं
वहाँ संगे असवद यहाँ बुत हैं संगीं
कहाँ जायें क़िस्मत के मारे बिचारे

बुरा हो उसका किया जिसने बरहम
ख़ुदाने किया फिर हुए एक तुम हम
ये मेल और मिल्लत खुदा रखे बाहम
तुम्हारे हमारे, हमारे तुम्हारे

वहाँ एक से एक बढ़कर हैं मूरत
ग़ज़ब की है तिफ़ले ब्रह्मन[3] की सूरत
मज़ा इन बुतों का जो लूटो शुजाअत
चले जाओ गंगा किनारे-किनारे।

कलाम-बाबू शुजाअत

1. छुपा हुआ, 2. पाने की चाहत, 3. ब्रह्मण का बेटा

जिस रोज़ से जुदा मेरा दिलदार हो गया
जीना तो जीना मरना भी दुश्वार [1] हो गया

कल तक वह मेरे पास तो रहता था दिलरूबा
होता था हर घड़ी मुझे दीदार यार का
ऐचर्ख़ [2] तूने डाल दिया क्या ये तफ़रक़ा [3]
वह शौख़ आज जानिबे अग़यार हो गया

देरो हरम [4] में या के कलीसा [5] के दरमियाँ
युसुफ़ को अपने ढूँढने जाऊँ कहाँ-कहाँ
फ़ुरक़त में उसकी ऐसा हुआ हूँ मैं नातवाँ [6]
बैठे बिठाये मुफ़्त गुनहगार हो गया

बुलबुल अबस [7] तू मुझसे सनाख़्वाँ [8] चमन की है
ख़्वाहिश तो मुझे बस उसी इक गुलबदन की है
चाहत गुलाब की न मुझे नसतरन की है
जब से ये ग़म गले का मेरे हार हो गया

आजिज़ [9] जो चाहता है रज़ामन्दिये ख़ुदा
ये शौक़े सर [10] क़दम पे मियाँ ख़ाँ के है झुका
कुछ इसमें शक नहीं है जो उस्ताद से फिरा
रूसवा हुआ ज़लील हुआ ख़्वार हो गया

कलाम-मियाँ ख़ाँ, रामपुर

1. मुश्किल, 2. आकाश, 3. अन्तर, 4. मन्दिर मस्जिद,, 5. चर्च, 6. कमज़ोर, 7. केवल, 8. तारीफ़ करना, 9. मजबूर, 10. घमंडी मस्तक

नहीं मिलेगा कोई एहले दिल दवा के लिए
निगाहे नाज़ को रोको ज़रा खुदा के लिए

तुम्हारे ज़ुल्म सहेगा तुम्हीं को चाहेगा
तुम्हारे नाज़ उठायेगा दिल जलायेगा
हमारी तरह कोई तुम से दिल लगायेगा
न होंगे हम तो तरस जाओगे वफ़ा के लिए

हमेशा आप के दीदार के लिए तरसे
हज़ारों जददो [1] जिहद की नज़र नहीं आए
झलक दिखाते ही पर्दे में जाके बैठ रहे
कभी तो सामने आओ ज़रा खुदा के लिए

कभी जो पास से बादेसबा गुज़रती है
तो पूछती है के क्या मुबतिला गुज़रती है
मैं उससे कहता हूँ कहिये के क्या गुज़रती है
तड़प रहा है दिल उस शौख़ बेवफ़ा के लिए

निगाह बर्क़ [2] है हातिफ़ तो आँसू मोतीचूर
बहश्त [3] वाले भी धोके में आके कहते हैं हूर
बजाये खून के रग-रग में दौड़ता है नूर
कहाँ से दिल कोई लाऐगा हर अदा के लिए

कलाम-हातिफ़ भोपाली

1. कठोर कार्य, 2. बिजली, 3. स्वर्ग

दास्ताने हया लिख रहा हूँ अभी
हुस्न का माजरा लिख रहा हूँ अभी

एक मुदद्त हुई कुछ न बोले हुऐ
आ नज़र तू कभी दिल टटोले हुऐ
बाम [1] पर आ भी जा ज़ुल्फ़ खोले हुऐ
देख शाने घटा लिख रहा हूँ अभी

मिलती है ज़िन्दगी हुस्न के तीर से
बाँध लेता है ज़ुल्फ़ों की ज़ंजीर से
क़त्ल करना निगाहों की शमशीर से
काम यह हुस्न का लिख रहा हूँ अभी

देख वक़्ते सफ़र अब नहीं भूलना
और सीधी डगर अब नहीं भूलना
उनका घर नामाबर [2] अब नहीं भूलना
फिर उन्हीं का पता लिख रहा हूँ अभी

देख अकरम मैं तेरे लिए जा बजा
सच है अकरम मैं तेरे लिए जा बजा
ख़त में अकरम में तेरे लिए जा बजा
आ भी जा, आ भी जा लिख रहा हूँ अभी

कलाम-डॉ. इकराम अकरम

1. छत, 2. दूत

चमन में जो तुम मुस्कुराये न होते
तो मौसम बहारों के आये न होते

अंधेरे कहीं मुँह छुपाये न होते
अगर उनकी ज़ुल्फ़ों के साये न होते
वो चेहरे से गैसू हटाये न होते
तो हम रोशनी में नहाये न होते

हसीनों की हर सू सताइश [1] न होती
दिले इश्क़ में फिर रिहाइश [2] न होती
कहीं मोतियों की नुमाइश न होती
अगर तुमने आँसू गिराये न होते

किरन गर तुम्हारे नयन से न आती
चमन में हवा बाँकपन से न आती
महक गर तुम्हारे बदन से न आती
तो ग़ुन्चे सबा ने खिलाये न होते

लबे गुल पे शबनम क़यामत गुज़रती
बहारों पे उस दम क़यामत गुज़रती
मेरे दिल पे अकरम क़यामत गुजरती
जो तुम मेरे दिल में समाये न होते

कलाम–डॉ. इकराम अकरम

1. तारीफ़, 2. रहना

शराबे ऐश में गर तू न मुबतिला होता
बहार बन के ज़माने पे छा गया होता

जो उसने दामने सद [1] चाक को सिया होता
ग़मों के जाम को ख़ामोश ही पिया होता
मरीज़ आपका कुछ ओर जी लिया होता
सुकूने दिल के लिए कुछ तो लिख दिया होता

सितम के दौर में राहत नसीब हो जाती
चमन के फूलों में शोहरत नसीब हो जाती
तुझे हयात की लज़्ज़त नसीब हो जाती
निगाहे शौक़ से एक जाम तो पिया होता

ख़्याले यार में कुछ देर को तो खो जाता
तू उनकी ज़ुल्फ़ के साये में काश सो जाता
यक़ीन है दामने रहमत में ज़ज़्ब [2] हो जाता
जो एक अश्के निदामत कहीं गिरा होता

तुझे क़ुबूल रही आबरू तो ऐ अकरम
तड़प रही है तेरी जुस्तजू तो ऐ अकरम
जमाले यार की है आरजू तो ऐ अकरम
तलाशे यार में हद से गुज़र गया होता

कलाम-डॉ. इकराम अकरम

1. सैंकड़ों टुकड़ों वाला, 2. सुखा लेना, 8. चाहत

हमीं से तुम्हें बेरूख़ी सूझती है
मगर ग़ैर से दिल लगी सूझती है

मकाँ से चले जब वह बाहर निकल कर
लिया फिर तो एक बोसा मैंने मचल कर
तो झुंझलाके बोले निगाहें बदल कर
तुम्हें हर घड़ी दिल लगी सूझती है

शबेवस्ल [1] अरमान निकलें तो क्यों कर
मसर्रत से ग़म मेरा बदले तो क्यों कर
दिले ज़ार अफ़सोस बहले तो क्यों कर
उन्हें जब के ताना ज़नी सूझती है

ग़ज़बनाक तेवर न बदला करो तुम
ज़रा में न ऐ जान बिगड़ा करो तुम
कभी ग़ैर से भी तो झगड़ा करो तुम
मुझी से ही तकरार की सूझती है

नक़ाब उनका रूख से जो उलटा तो बोले
बग़ोंर उनकी सूरत को देखा तो बोले
जो एक बोसा लिल्लाह माँगा तो बोले
के ज़ाहिर तुम्हें बस यही सूझती है

कलाम-ज़ाहिर

1. मिलाप की रात

रास्ते बन्द किये देते हो दीवानों के
ढेर लग जायेंगे बस्ती में गरीबानों के

इन्किलाब आयेगा क्या शाने से आईने से
मैं जो चुप हूँ तो कोई और ही इतना कह दे
आप दिन रात सँवारा करें गैसू अपने
कहीं हालात बदलते हैं परेशानों के

शामे ग़म की न कहीं भूले से अब होगी सहर [1]
रूख़ करेगा न कोई होगी किसी को न ख़बर
पास कुछ भी नहीं और मुल्के अदम [2] का है सफ़र
हौसले देखिये इन बे सरो सामानों के

गर्दिशे वक़्त का चलता है इशारों पे निज़ाम
मेरे हर मिसरे में रक़्साँ [3] है ख़्याले ख़य्याम
वह भी क्या दिन थे इधर शाम उधर हाथ में जाम
अब तो रस्ते भी रहे याद न मयख़ानों के

ये जो ख़ामोश हैं बैठे हैं झुकाये हुए सर
उनकी जानिब भी उठा पाये न मसूद नज़र
ऐसे शरमाये हुऐ बैठे हैं काबे में क़मर
जैसे होते हैं निकाले हुए बुतख़ानों के

कलाम-मसऊद रज़ा

1. सुबह, 2. मृत्यु लोक, 3. नृत्य

हर मूऐतन [1] को इश्क़ सरापा बनायेंगे
जिस तहर होगा हम तुम्हें अपना बनायेंगे

कुछ दिन रहा जो और इसी तरह सिलसिला
रूसवाईयाँ बढ़ेंगी न कुछ होगा फ़ाईदा
दीवाना तुम बनाके उन्हें हँस रहे हो क्या
दीवाने एक दिन तुम्हें लैला बनायेंगे

हम को भी आप दावते नज़्ज़ारा दीजिये
बेताबे शौक़ेदीद [2] हैं हाँ देख लीजिये
वादा तो हमसे जलवा नुमाई का कीजिये
हम अपनी हर निगाह को मूसा बनायेंगे

इस गर्दिशे ज़माने का हम पर जो है इताब [3]
मुँह तोड़ देंगे उसका अभी देखना जवाब
पैदा करेंगे मरकज़े वहशत में इन्क़ेलाब
सहरा तो बाग़ बाग़ को सहरा बनायेंगे

बेसाख़ता [4] वकील ने महफ़िल में कह दिया
ये ओर बात है के लगा हो उसे बुरा
मयकश हैं इनका छेड़ना वाइज़ नहीं रवा
बेबाक [5] हो गए तो ज़्यादा बनायेंगे

कलाम-वकील भोपाली

1. शरीर के हर अंग, 2. देखने का शौक़, 3. इल्ज़ाम, 4. एकदम, 5. निडर

लूटे हैं हमने खूब मज़े उस जमाल [1] के
तस्वीरे हुस्न रखी है दिल में संभाल के

उनको सुना रहा हूँ मोहब्बत के वाक़ेआत
मुझ पर न उनका लुत्फ़े करम है न इलतेफ़ात [2]
ये और बात है कि न समझें वह मेरी बात
लेकिन जवाब इसमें है हर एक सवाल के

हाँ अपने दस्ते [3] नाज़ से उसको पिलाईये
उसकी तरफ़ निगाहे तबज्जो उठाईये
उसकी हयात [4] को भी मुनव्वर बनाईये
वाइज़ की सिम्त देखिये साग़र उछाल के

क़ाइल नहीं हो दिल में ज़रा ठीक बात पर
होते हो बेसबब ही ख़फ़ा ठीक बात पर
तुम मानते हो आज बुरा ठीक बात पर
उलटे जवाब देते हो सीधे सवाल के

जिनको वकील मैंने कहा अपनी जान दी
जिनको बनाया हासिले उमरे ख़्वाँ वही
कल तक जो मेरे ज़ीनते पहलू थे हाँ वही
मुझ को डराने आये हैं आँखें निकाल के

कलाम-वकील भोपाली

1. ख़ूबसूरती, 2. कृपा दृष्टि, 3. नाज़ुक, 4. जीवन

ख़िजां की निगाहें बदलते बदलते
बहार आ गई आश्याँ जलते जलते

उसे राहज़न [1] से शिकायत भी क्या हो
ज़बाँ पर भला उसके कैसे गिला हो
तबाही पे फिर उसकी क्या तबसिरा [2] हो
जिसे लूट ले रहनुमा चलते-चलते

तुझे याद आयेगा जब ये फ़साना
रूलायेगा बरसों ये ज़ालिम ज़माना
पशे माँ [3] तू अपनी जफ़ाओ [4] पे होगा
जवानी की ये दोपहर ढ़लते ढ़लते

तेरी दास्ताँ दहर [5] में आम ये है
तेरे वास्ते सिर्फ़ पैग़ाम ये है
तेरी नाख़ुदाई पे इलज़ाम ये है
कि डूबा सफ़ीना [6] संभलते संभलते

न हो जायें अपने ये लम्हें पराये
वकील अब न हो जायें तारीक [7] साये
चलो सूएमन्ज़िल [8] कहीं बुझ न जाये
चिराग़े सरे रहगुज़र जलते-जलते

कलाम-वकील भोपाली

1. लुटेरा, 2. समीक्षा, 3. शर्मिन्दा, 4. ज़ुल्फ़, 5. संसार, 6. नाव, 7. अंधेरा,, 8. मंज़िल की ओर

क़ातिल से कोई कहदे इतना मेरा कहना कर
आईने में तू अपनी सूरत को न देखा कर

उन मस्त निगाहों का हो जाये जो दीवाना
दुनिया न कहेगी फिर कमज़र्फ़ [1] का अफ़साना
बख्शेगा तुझे साग़र फ़िर साक़िये मयख़ाना
पीने के लिए वाइज़ तू ज़र्फ़ तो पैदा कर

हर लम्हा मोहब्बत में ग़ैरो को हँसाते हैं
इस तरह यक़ीं कीजे दीवाना बनाते हैं
वह हमसे सरे महफ़िल नज़रों को चुराते हैं
जिनके लिए दुनिया को हम आये हैं ठुकराकर

जो बात मुनासिब है कहते हुए डरता है
हर वक्त बनावट है हर लम्हा मुकरता है
तू ज़िकरे [2] मये रंगीं दिन रात जो करता है
मयख़ाने के ऐ वाइज़ आदाब भी समझा कर

कोई ये वकील उसको किस तरह से समझाये
ऐसा न हो दीवाने बे जुर्म सज़ा पाये
इलज़ाम तबाही का सर तेरे न आ जाये
मसूद को महफ़िल में इस तरह न देखा कर

कलाम-मसऊद रज़ा भोपाली /वकील भोपाली

1. बुरा मनुष्य, 2. मदिरा पान की बात

शफ़क़ [1] का रंग कुछ ऐसा दिखाई देता है
लहू ज़मीं पे टपकता दिखाई देता है

फ़ज़ाए [2] दहर के दिलचस्प कारख़ाने में
नहीं है झूठ कोई बात इस फ़साने में
वह जिनको कुछ नज़र आता नहीं ज़माने में
उन्हीं को हद से ज़्यादा दिखाई देता है

किसी ग़रीब को अन्दोहगीं [3] नहीं करता
हमारे कहने का कोई यक़ीं नहीं करता
शराबो जाम की बातें कभी नहीं करता
ये आदमी तो फ़रिश्ता दिखाई देता है

निगाहे शौक़ इशारों से ये कहे कैसे
तुम्हीं बताओ भला कैसे तुमको समझाये
उसे लिऐ हुऐ फिरते हैं शहर के लड़के
जो आईना हमें टूटा दिखाई देता है

कोई ये कैसे बताये ये बात मुश्किल है
उसी पे अपना भी कुरबान दोस्तों दिल है
वही तो वाक़ई मसूद अपना क़ातिल है
जो आज सबको मसीहा दिखाई देता है

कलाम–मसूद रज़ा

1. धनक, 2. सांसारिक हवा, 3. ग़म से भरा

मैंने कहा क़रीब आ..... उसने कहा नहीं–नहीं
मैंनें कहा के मान जा..... उसने कहा नहीं–नहीं

ग़म की स्याह रात में फिरता रहा हूँ बेख़बर
मुश्किल से आज आयी है लेकर ख़ुशी नई सहर
तिशनऐ [1] दीद है नज़र कोई नहीं इधर उधर
अब तो नक़ाबे रूख़ उठा उसने कहा नहीं–नहीं

मोहताज हो गया है वह तेरी निगाहे फ़िक्र का
जिसका तुझे ख़्याल है न शौक़ उसके ज़िक्र का
आया है हाल पूछने जब तू मरीज़े हिज्र [2] का
सीने पे हाथ रख ज़रा उसने कहा नहीं–नहीं

मुझसे मिले बग़ैर वह नज़दीक से गुज़र गया
हैरान हो गया था मैं या रब ये आज क्या हुआ
उसकी वफ़ा पे शक हुआ क़ाबू में दिल न रह सका
मैंने कहा के बेवफ़ा उसने कहा नहीं–नहीं

उसकी निगाहे शोक़ में रंगीन इन्क़ेलाब था
आया था मेरे सामने वह होके बेहिजाब सा
इज़हार करके इश्क़ का अकरम ने होश में कहा
क्या मुझसे कुछ हुई ख़ता उसने कहा नहीं–नहीं

कलाम–डॉ. इकराम अकरम

1. दीदार का प्यासा, 2. जुदाई, तन्हाई

हुस्न जब सामने बे नक़ाब आ गया
दिल की दुनिया में एक इन्क़ेलाब आ गया

मुस्कुराये तो कुछ लोग कहने लगे
गुल खिलाये तो कुछ लोग कहने लगे
आप आये तो कुछ लोग कहने लगे
देखिये देखिये माहताब आ गया

जाने क्यों बेख़तर बे तकल्लुफ़ थे वह
आज तो रातभर बे तकल्लुफ़ थे वह
ख़्वाब में किस कदर बे तकल्लुफ़ थे वह
सामने आ गये तो हिजाब आ गया

कुछ बहारों की सूरत नज़र आयेगी
उनकी आमद मेरे दिल को गरमाऐगी
ज़िन्दगी कुछ तेरी उम्र बढ़ जायेगी
आज क़ासिद [1] अगर कामयाब आ गया

दे दिया फिर किसी ने सहारा उसे
मिल गया है भंवर में किनारा उसे
दिल से अकरम ने जब भी पुकारा उसे
होके बेताब वह बेहिजाब [2] आ गया

कलाम-डॉ. इकराम अकरम

1. दूत, 2. बे परदा

उठे जब वह नीची नज़र चुपके-चुपके
पड़े तीर फिर कारगर चुपके-चुपके

मैं जी लूँगा हँस-हँस के उलफ़त की बाज़ी
पलट जायेगी मेरी क़िस्मत की बाज़ी
लगी है बराबर मोहब्बत की बाज़ी
इधर चुपके-चुपके उधर चुपके-चुपके

उसे कैसे सारे जहाँ से छुपाऊँ
ये है वाक़ेआ कैसे में भूल जाऊँ
बज़ाहिर जो हमदर्द हैं क्या बताऊँ
लगाते हैं हर वक़्त घर चुपके-चुपके

ज़माने के हाथों से मजबूर हैं वह
अभी पर्दाए दिल में मस्तूर [1] हैं वह
अभी मेरे आग़ोश [2] से दूर हैं वह
न आये न आये सहर चुपके-चुपके

न होगा कोई कारगर तीर उनका
न तड़पेगा इस तरह नख़चीर उनका
अगर ज़िद पे आ जाये शाहिद जो उनका
रखेंगे वह ज़ानू पे सर चुपके-चुपके

कलाम-शाहिद भोपाली

1. छुपा हुआ, 2. आलिंगन

हम दुआ देंगे उमर भर देखो
दिल टटोलो ज़रा जिगर देखो

मोज टकराई आके साहिल से
गर्द उठी है राहे मन्ज़िल से
बाद मुद्दत के उनकी महफ़िल से
लेके ख़त आया नामाबर देखो

बोलेगा सरपे चढ़ के ये जादू
ज़ुल्फ़ महकायेगी तेरी ख़ुशबू
नज़र आयेगी रोशनी हरसू [1]
रात का जब खुलेगा दर देखो

राहे फ़ुरक़त में वह भी छोड़ गये
चारा साज़ों [2] से आज कौन कहे
रफ़्ता रफ़्ता जुदा हुए हम से
साथ जितने थे हमसफ़र देखो

मशवरे ग़ैर से नहीं करते
ऐ वकील आज उनसे ये कह दे
तुम को हम जैसे चाहने वाले
याद आयेंगे उम्र भर देखो

कलाम-वकील भोपाली

1. चारों ओर, 2. शुभचिन्तक

उनके गेसू [1] जो कभी रुख़ पे बिख़र जाते हैं
ग़म के उलझे हुए अफ़साने सँवर जाते हैं

सामने जब भी मोहब्बत का सवाल आता है
बे इरादा रूख़ेरोशन पे मलाल आता है
जब उन्हें मेरी तबाही का ख़्याल आता है
अपनी तस्वीर को वह देख के डर जाते हैं

तूरो मन्सूर का दुनिया ने सुना है क़िस्सा
देखने वालों ने हर दौर में अक्सर देखा
महफ़िले होश में रहता है ख़िरद [2] का जज़्बा
मंज़िलेदार [3] से दीवाने गुज़र जाते हैं

जिन के एहसास की तस्वीर थी पैग़ामें सहर
मौजे गुल जिन के रहा करती थी खुद ज़ेरे असर
कल गुलिस्तां में जो बिजली से लड़ाते थे नज़र
आज फूलों के तबस्सुम से वह डर जाते हैं

नग़मए इश्क़ से पैग़ामे वफ़ा के शाहिद
किस तक आते हैं ये इनामे वफ़ा के शाहिद
देखना ये है कि इलज़ाम वफ़ा के शाहिद
मेरे सर आते हैं या ग़ैर के सर जाते हैं

कलाम–शाहिद भोपाली

1. बाल, 2. बुद्धि, 3. फांसी घर

जब रवानी पे तेरी तेग़े[1] अदा होती है
सरझुकाये हुए मक़तल में क़ज़ा[2] होती है

मुजरिमे इश्क़ की ख़ंजर से उतारो गरदन
और नेज़े[3] पे बसद शौक़ चढ़ा दो गरदन
ख़ून आलूदा रक़ीबों को दिखा दो गरदन
ये बता दो के यों तकमीले वफ़ा होती है

सैर करने के लिए आज चमन में आओ
बन सँवर कर ज़रा अन्दाज़े दुल्हन में आओ
बस बसाकर मेरी जाँ मुश्के ख़तन[4] में आओ
ज़हरे क़ातिल वो दिखा दो जो अदा होती है

इश्क़ ने मुझको ज़माने में किया है रूसवा[5]
धज्जियाँ जेबोगरीबाँ की लिए हूँ फिरता
मेरी हालत की मगर उनको नहीं कुछ परवा
इन हसीनों की मोहब्बत भी बला होती है

एक बोसे[6] पे बिगड़ते हो कोई बात भी है
आप ना हक़ को उलझते हो कोई बात भी है
दुशमनों की तरह तकते हो कोई बात भी है
ऐसी ज़ाहिर से तो हर वक़्त ख़ता होती है।

कलाम-ज़ाहिर

1. तलवार, 2. मौत, 3. खंजर, 4. चीन का वो नगर जहाँ से कस्तूरी आती है, 5. बदनाम, 6. चुम्बन

इश्क़ की रूदाद[1] को हद से गुज़रजाने तो दो
मेरे पहलू में उन्हें दम भर ठहर जाने तो दो

ज़िन्दगी भर बस इसी एक आरजू में हम जिये
अश्क[2] जो आँखों में आये उनको भी हँस कर पिये
मैं कहूँगा ठहरो कुछ दिल की तसकीं के लिए
आप ये कहते रहेंगे मुझको घर जाने तो दो

दास्ताँ फिर इश्क़ की ए दोस्तो दोहराऊँगा
बात ये मैं चारागर नासेह[3] को भी समझाऊँगा
देखना है ज़र्फ़ मेरा तुम को तो दिखलाऊँगा
आईने के सामने उनको सँवर जाने तो दो

जो न सुनने की हों बातें किस तरह उनको सुनूँ
टूट कर अब रह गया है इश्क़ का सारा फ़ुसूँ[4]
फिर मज़ा आयेगा तुम को ऐहले दिल ऐहले जुनूँ
उनके रुख़ पर और ज़ुल्फ़ों को बिखर जाने तो दो

चारागर हो नासेह मुश्फ़िक[5] हो शाहिद मत डरो
साफ़ ही कहना है तुम को साफ़ ही तुम तो कहो
आरजू तो है नये ज़ख़्मों की लेकिन दोस्तों
पहले जो बख़्शे थे तुमने उनको भर जाने तो दो

कलाम-शाहिद भोपाली

1. कहानी, 2. आँसू, 3. नसीहत करने वाला, 4. जादू, 5. मेहरबान

हो चुकी शर्मो हया सर तो उठाओ साहब
चाँद से चेहरे के जलवे तो दिखाओ साहब

तालिबे [1] दीद से इतना तो नहीं शर्मो हिजाब
हुस्न वालों को कहाँ पर्दे में रहने की है ताब
माहो खुरशीद [2] नहीं रखते हैं चेहरे पे नक़ाब
मुझ से शर्मिन्दा हो क्यों मुँह न छुपाओ साहब

हुस्न के बाग़ में कहते हैं तुम्हें ग़ैरते गुल
मैं भी गुलज़ारे मोहब्बत में हूँ रश्के बुलबुल
न गये गुज़रे न कुछ मैं गया गुज़रा बिलकुल
फिर रूकावट है ये क्यों दिल तो मिलाओ साहब

दिलसी शयमुफ़्त में हम आप को दे बैठे हैं
दीनों ईमान भी कुरबान किये बैठे हैं
दिल ही दिल में सभी अरमान लिए बैठे हैं
मुद्दतों ज़ुल्म किये अब न सताओ साहब

अच्छी सूरत पे फ़िदा प्यारी अदा के सदक़े
बाँकी चितवन [3] पे फ़िदा ज़ुल्फ़े दुता [4] के सदक़े
जलवाए रुख़ पे फ़िदा शर्मो हया के सदक़े
सब्र को आज तो छाती से लगाओ साहब

कलाम–सब्र उस्ताद

1. देखने की तमन्ना,, 2. चाँद सूरज, 3. तिरछी नज़र, 4. घनेबाल

मज़ा क्या ख़ाक दे सैय्याद [1] तुझको दास्ताँ मेरी
न मैं समझूँ ज़बाँ तेरी न तू समझे ज़बाँ मेरी

दिया है जब से दिल तुमको पड़े हैं जान के लाले
कोई सुनता नहीं है दास्ताने ग़म कहूँ किस से
शबे फ़ुरक़त तुम्हारी बेवफ़ाई ग़ैर के ताने
हज़ारों रंज हैं और एक जाने नातवाँ [2] मेरी

इलाही वो भी ईज़ा [3] पाये जो औरों को ईज़ा दे
जो तड़पाता है मेरे दिल को यारब उसको तड़पादे
असर ज़ज़्बे मोहब्बत कम से कम इतना तो दिखला दे
वह हालत उनकी हो जाये जो हालत है यहाँ मेरी

निगाहे नाज़ में शोख़ी है चितवन है शरारत है
बुते पुरफ़न [4] के आगे बात करना भी क़यामत है
कहीं ये कह दिया था आप से मुझको मोहब्बत है
बस इतनी बात पे कटवाई जाती है ज़ुबाँ मेरी

जहाँ में सैकड़ों एहले हुनर [5] बहतर से हैं बहतर
तो क्यों ख़ामोश हो हर दिल कलामे बे बहा सुनकर
मेरी हस्ती ही क्या है क्या लिखूँ मैं चारबैत असग़र
न इस क़ाबिल बयाँ मेरा न इस क़ाबिल ज़बाँ मेरी

कलाम–असग़र

1. ज़ालिम, 2. कमज़ोर, 3. दुख दर्द, 4. माहिर प्रेमी, 5. काम के लोग

नज़र के साथ जो तेवर दिखाये जाते हैं
हमीं पे आज यह ख़ंजर चलाये जाते हैं

समझ रहे हैं जो सूरत हमारी तकते हैं
मिसालेख़ार [1] निगाहों में वह खटकते हैं
मुक़ाबले में वह आने से अब झपकते हैं
ख़ुदा का शुक्र है गैरों पे छाये जाते हैं

ये आज किस लिए बातें हैं बेतुकी हमसे
पुराने चाहने वाले हैं ये बेरूख़ी हमसे
गवारा होंगी न गुस्ताख़ियाँ कभी हमसे
मुक़ाबले के लिये हम भी आये जाते हैं

निराले ढँग से ज़ुल्फ़ों को क्या बनाया है
लिबासे [2] फ़ाख़रा इतरों में क्या बसाया है
ग़ज़ब का पान है होंठों को क्या रचाया है
हुज़ूर आज तो हमको भी खाये जाते हैं

सितम है रोके से रूकती नहीं हँसी उनकी
हमारे सामने ग़ैरो से दिल लगी उनकी
गवारा किस तरह हमको हो बेरूख़ी उनकी
हम उनके नाज़ बराबर उठाये जाते हैं

कलाम-ज़ाहिर भोपाली

1. कांटे की तरह, 2. सुन्दर वस्त्र

मेरे साक़िया बता दे वह शराब कौन सी है
जिसे पी के सारी दुनिया तेरे दरपे झूमती है

तेरी याद को भुलाकर मैं शराब पी रहा हूँ
ये ग़लत के मुस्कुराकर मैं शराब पी रहा हूँ
ग़मे दिल से तंग आकर मैं शराब पी रहा हूँ
मेरी मौत मुस्कुराकर मुझे जाम दे रही है

मेरी बेख़ुदी से खेले मेरी आशिक़ी से खेले
मेरे अपने होके देखो मेरी बेबसी से खेले
मेरे दोस्त बनके तुम भी मेरी ज़िन्दगी से खेले
ये चलन है किस जगह का ये कहाँ की दोस्ती है

मेरी बेबसी पे सारा है उदास आज गुलशन
मेरे दिल को डस रही है यही रात दिन की उलझन
मेरे आज मुझसे अपने क्यों बचा रहे हैं दामन
ये बताये कोई मुझको भला मुझ में क्या कमी है

यहाँ सब ही अजनबी हैं किसे हालेदिल सुनाऊँ
ऐ बशीर दिल को अपने मैं कहाँ-कहाँ जलाऊँ
जिसे मेरे दिल ने चाहा ऐ ज़िया मैं क्या बताऊँ
मेरी ज़िन्दगी का दुशमन वही एक आदमी है

कलाम-बशीर

पे ब पे [1] नाकामियों से ज़ख़्म जब खाता है दिल
आदमी रहता है ज़िन्दा और मर जाता है दिल

मेरी बातें मेरे कहने को ये सुनता है कहाँ
उनका लुत्फ़ेख़ास है हर लम्हा उसका राज़दाँ
उनकी नज़रें हम नफ़्स हैं उनके जलवे महरबाँ
अब मेरे क़ाबू में काहे को भला आता है दिल

मिल गये राहे तजस्सुस [2] में मुझे अच्छे शरीक
आपने देखे हैं दुनियाँ में कहीं ऐसे शरीक
हिज्र की रातों में दोनों हैं बराबर के शरीक
जब उन्हें मैं याद करता हूँ तड़प जाता है दिल

वह अगर पूछें तो कहना आपका है इन्तज़ार
मेरी बेताबी से होंगे वह यक़ीनन बेक़रार
और कुछ सुनना तो क़ासिद उनको होगा नागवार
सिर्फ़ इतना अर्ज कर देना के घबराता है दिल

है जुनूँ ना आशना मसूद वहशत की फ़ज़ा
एक होकर रह गई है रंजोराहत की फ़ज़ा
मोतदिल है आजकल शैरी मोहब्बत की फ़ज़ा
अश्क बरसाती हैं आँखें आग बरसाता है दिल

कलाम-शैरी भोपाली

1. हर बार, 2. खोज

मेरी तरफ़ वो देख कर नाज़ से मुस्कुराये क्यों
उसको मेरी पड़ी है क्या दर्द मेरा बटाये क्यों

होते थे पहले क्यों ख़फ़ा मेरे हर एक सलाम पर
अब ये यूरिशें [1] हैं क्यों आपके इस गुलाम पर
दोगे नया फ़रेब क्या मुझको वफ़ा के नाम पर
मेरे ग़रीब ख़ाने तक ये बताओ आये क्यों

मेरी दुआ यही है अब फूला फला रहे चमन
तालिबे दीद जितने हैं सब हों शरीके अंजुमन
यों तो बहुत से आप पर करते फ़िदा हैं जानोतन
मेरे अलावा दूसरा आपके नाज़ उठाये क्यों

मैंने तो ये नहीं कहा सामने मेरे आईये
लज़्ते [2] दर्द इश्क़ की और तड़प बढ़ाईये
इतने क़रीब आये क्यों ये तो ज़रा बताईये
जलवा दिखाके आपने होश मेरे उड़ाये क्यों

तू भी निगाहे शौक़ से दामनो आसतीन देख
शाहिदे ख़स्ताहाल [3] की बातों पे कर यक़ीन देख
तुझ से ज़्यादा शहर में और भी हैं हसीन देख
तेरी तरफ़ बतौरे ख़ास कोई नज़र उठाये क्यों

कलाम-शाहिद भोपाली

1. आक्रमण, 2. दर्द का स्वाद, 3. गरीब/निर्धन

नातपाक

मोहब्बत में रसूलुल्लाह [1] की बनजाऊँ मस्ताना
पिलादे साक़िया मुझ को मयवेहदत [2] का पैमाना

मदीना तययेबा की सरज़मीं पर अक़्ल हैराँ है
वहाँ का पत्ता पत्ता और गुल रशके गुलिस्ताँ है
दिलोजाँ से फ़िदा उस पर बहार बाग़े रिज़वाँ है
शहंशाहे [3] दो आलम का वहाँ दरबारे शाहाना

मेरे दिल में निहाँ [4] दर्दे मोहब्बत ज़ज़्बे उलफ़त है
बयाँ वह किस तरह से हो जुदाई में जो हालत है
उन्हीं के रूबरू इस तरह से मरने की हसरत है
के जैसे शम्मे रोशन पर फ़िदा होता है परवाना

मोहम्मद नाम है और शाफ़ए मेहशर [5] लक़ब जिनका
ख़ुदा के बाद लेते हैं ख़ुशी से नाम सब जिनका
कुराने पाक में मदहसरा [6] है ख़ुद ही रब जिनका
उन्हीं का हूँ मैं शेदाई उन्हीं का हूँ मैं दीवाना

जमाले पाक है उनका हसीं दुनिया में यकता है
हक़ीक़त में वह शाने किब्ररिया शम्मे तजल्ला है
उसी को देखने की दिल में ज़ाहिर के तमन्ना है
के जिस शमेनुबुव्वत के हैं ख़ुद जिबरईल परवाना

कलाम-ज़ाहिर भोपाली

1. हज़रत मोहम्मद, 2. पवित्र, 3. हज़रत मोहम्मद, 4. छुपा हुआ, 5. प्रलय के समय काम आना, 6. अच्छाई बतलाना

नातपाक

हबीबे ख़ुदा [1] अर्श [2] पर जाने वाले
दोबारा मुझे पास अपने बुलाले

गुनाहों के तूफ़ाँ में डगमग है नैय्या
लगा दे इसे पार अच्छे खिवय्या
अंधेरी है रात और बहन है न भैय्या
मेरी ज़िन्दगानी है तेरे हवाले

शफ़ीउलवरामालिके दोसरा हो
भरोसा हो उम्मीद हो आसरा हो
शफ़ा हो मेरे दर्दे दिल की दवा हो
ऐ नूरे ख़ुदा दोनों जग के उजाले

निगाहों से तू दिल में आता चला जा
तू रग रग में मेरी समाता चला जा
शफ़ाअत [3] का दरया बहाता चला जा
तेरे ढंग दाता हैं सब से निराले

रसूलों का सरदार नबयों का अफ़सर
हर इक से है बहतर हर इक से है बरतर
ज़रा अपने हातिफ़ पे भी एक नज़र कर
बड़ी शान वाले बड़ी आन वाले

कलाम-हातिफ़ भोपाली

1.अल्लाह का दोस्त, 2. आकाश घर, 3. सिफ़ारिश करना

नातपाक

अल्लाह का जलवा है तनवीर मोहम्मद की
है नूरे ईलाही से तामीर मोहम्मद की

मैराज में पास अपने एक आन में बुलवाया
ख़िदमत में बुलाने को जिबरईले अमीं आया
जो शाने मुबारक में अल्लाह ने फ़रमाया
कुरान से ज़ाहिर है तौक़ीर मोहम्मद की

की नूरे ईलाही ने जिस वक़्त ज़िया [1] पाशी
वह दौर था शैतानी घर घर में खुदाई थी
बुत गिर पड़े सजदे में सब मिट गई तारीकी
जिस वक़्त के चमकी है शमशीर मोहम्मद की

खुश हो के पसेमुर्दन [2] मैं कब्र में जाऊँगा
आयेंगे फ़रिश्ते जब मैं होश में आऊँगा
ताज़ीम को उठूँगा आँखों से लगाऊँगा
जब मुझको दिखायेंगे तस्वीर मोहम्मद की

जब नाम पे आक़ा के कुरबाँ हो दिलो जाँ से
क्यों मिस्ले क़मर इतने ग़मगीन हो ईसियाँ [3] से
कुछ ग़म नहीं मेहशर [4] का ज़ाहिर है ये कुरआँ से
जन्नत है मुसलमाँ की जागीर मोहम्मद की

कलाम-क़मर

1. प्रकाशमय, 2. मृत्यु पश्चात्, 3. गुनाह, 4. प्रलय

नातपाक

ले आयेंगे नबी पर ईमान रफ़्ता रफ़्ता
पढ़ने लगेंगे बुत भी कुरान रफ़्ता रफ़्ता

नाकाम ज़िन्दगी में मायूस हो न जाना
हिम्मत से काम लेकर आगे क़दम बढ़ाना
एक दिन मर्सरतों का आ जायेगा ज़माना
होगी हर ऐक मुश्किल आसान रफ़्ता रफ़्ता

है आसरा नबी का अल्लाह का सहारा
बेफ़िक्रीयाँ मिलेंगी दिल होगा खुश हमारा
जीते रहे तो हम भी देखेंगे ये नज़ारा
बख़शिश [1] का पैदा होगा इमकान रफ़्ता रफ़्ता

ज़िन्दा नहीं रहेगा कोई भी ता क़यामत
हर एक बेबसी की बन जायेगा अलामत
अपनी बदी पे होगी इन्सान को निदामत [2]
हर जानदार होगा बेजान रफ़्ता रफ़्ता

क्या एतबार हातिफ़ सरसब्ज़ई चमन का
कर देगा ख़त्म उसको बादे ख़िज़ा [3] का झौंका
वीराने हो रहे हैं आबाद तो ख़ुशी क्या
आबादियाँ भी होंगी वीरान रफ़्ता रफ़्ता

कलाम-हातिफ़ भोपाली

1. माफ़ी, 2. शर्मिन्दा होना, 3. पतझड़ की हवा

सवाई

दस्तगीरी [1] का यही वक़्त है सरकार मेरे
शहे [2] अबरार मेरे

ऐशो इशरत में तो अग़यार [3] हैं ग़ैरो से सिवा
हो गये हैं बखुदा

अब बुरे वक़्त में अपने हुए अग़यार मेरे
शहे अबरार मेरे

देखिये रंजो अलम ने है मुझे घेर लिया
लो ख़बर जल्दी शहा

ऊम्मती आपका हूँ ऐहमदे मुख़्तार मेरे
शहे अबरार मेरे

न फिरे मुझसे ख़ुदा गरचै ज़माना फिर जाये
अपना बैगाना फिर जाये

फ़िक्र मुतलक़ [4] नहीं जब आप हैं ग़मख़वार मेरे
शहे अबरार मेरे

दीनों दुनियाँ में वसीला [5] मुझे बस आपका है
नहीं माँ बाप का है

शर्म मिसकीन की है आपको सरकार मेरे
शहे अबरार मेरे

कलाम-मिसकीन

1. मदद करना, 2. हज़रत मोहम्मद, 3. दुश्मन, 4. ज़रा भी नहीं, 5. ज़रिया

सवाई

आ मेरे दिलदार तेरी लूँ बलाएँ बार-बार
दिल है मेरा बेक़रार

हिज्र में रहता है मुझको रोज़ तेरा इन्तेज़ार
है मेरा सूना दयार

तूने मेरे साथ जो वायदे किये थे बहम [1]
क्या हुए क़ौलोक़सम [2]

तेरी जुदाई में मेरा हो गया सीना फ़िगार [3]
छिन गये सब्रोक़रार

हाल दिलेज़ार का क्या करूँ तुझसे बयाँ
करता हूँ आहोफ़ुग़ाँ

कूचओ बाज़ार में फिरता हूँ दीवानावार
कोई नहीं ग़मगुसार

जब से सुना है के यह ज़िन्दगी इक ख़्वाब है
हाशमी बैताब है

अपने गुनहगार का बेड़ा लगा दे तू पार
ऐ मेरे परवरदिगार

कलाम-मसऊद हाशमी

1. मिलकर, 2. कस्में वादे, 3. ज़ख़्मी

सवाई

पैचमें लाते हैं ग़ज़ब दिल की मेरे ऐ सनम
जुल्फ़े घुँघर वालियाँ

ढ़ाता क़यामत है तेरा क़ामते [1] मौज़ू सनम
दिल पे ख़ुदा की क़सम

करती हैं बे ख़ुद मुझे हाये ग़ज़ब हाये सितम
आँखे ये मतवालियाँ

मारते एक दम में हैं लाखों को गैसू तेरे
बाल में बिच्छू तेरे

बुलबुले उड़ाते हैं घटाओं के धुएँ दम बदम
ज़ुल्फ़े काली कालियाँ

गुल हमा [2] तन गोश [3] बरआवाज़ हैं ज़ोहरा [4] रविश
है अजब एक कशमकश

सुनके तेरा सहने गुलिस्ताँ में ग़ज़ब ताल सम
गुन्चों ने दी तालियाँ

क्या ही ग़ज़ब कहते हैं ये दायरे पे चारबैत
राग के फ़न के पचैत

आबरू ये राग पठानों का है बस मौ तसीम [5]
क्या सुनने वालियाँ

शायर-आबरू उस्ताद

1. मुनासिब क़द 2. फूल हर वक्त, 3. सुनना, 4. सितारे की चाल, 5. मदद मांगना

सवाई

शमे रू[1] तू है मेरी जान मैं परवाना तेरा
क्यों है शरमाना तेरा

दिल दिया जान भी देने को है मौजूद सनम
अभी सर करे क़लम

राऐगाँ[2] जाने न दूँगा कभी फ़रमाना तेरा
रिन्द मस्ताना तेरा

वादऐ वस्ल से इन्कार ही बहतर है कहीं
ऐ मेरे माहजबीं

दुखने लगता है इसी रोज़ से शाना तेरा
न हुआ आना तेरा

हाये दुश्मन पे तो रहती है इनायत की नज़र
ऐ बुते रश्कै क़मर[3]

और मुझ पर ही नये रोज़ सितम ढाना तेरा
मुफ़्त तड़पाना तेरा

तुम को मेहशर बहुत होशियार समझते थे मगर
सुनते हैं ऐसी ख़बर

दामे काकुल[4] में फँसा है दिले फ़रज़ाना[5] तेरा
हाये दीवाना तेरा

शायर–मेहशर

1. शमा का चेहरा, 2. बेकार, 3. चाँद जिसे देखकर हसद करें, 4. बालों के जाल, 5. बुद्धिमान

दो बन्दी

रंग डाल न ऐ बालम है सास मोरी जालिम
हो जायेगी कुनबे में सब बात मोरी नहूरी

है नन्द मोरी सत्ता देवर है मोरा मुखिया
दे छोड़ मुए बलमा जाये न भगत मोरी

मास से बची हरदम घूंघट से रही जालिम
पट आँखें न हों तेरी तूने न रखी कोरी

मूरख के पड़ी पाले जीने के हुए लाले
ऐ सखियों ज़रा आके मोरी भी ख़बर लो री

न कसे है मोरा ज्यौरा धर के है बदन सुगरा
है हैरे मोरे बलमा बय्याँ न पकड़ मोरी

बैरन से करूँ बतयाँ सोतन से मिलो छतियाँ
बल मुझ में नहीं सैय्याँ मों से न करो जोरी

ऐ असग़र अली छोड़ो कल आऊँगी सच मानों
घर वालों से आयी हूँ मैं आज छुपा चोरी

कलाम-असग़र अली

हम आपको सुनाते हैं अब शाने चारबैत
हम जाने चारबैत हैं, हम जाने चारबैत

मरदों का तराना कहो या राग पठानी
यारों ने लुटा दी है यहाँ अपनी जवानी
इस राग का दुनियाँ में नहीं कोई भी सानी
कहते हैं ऐसे राग को अ़फ़ग़ाने चारबैत

या रब हरा भरा रहे ऐहले अदब का बाग़
इस बज़्में चारबैत का रोशन रहे चिराग़
इस .फ़न में जीने वालों का ताज़ा रहे दिमाग़
फूला फला रहे ये गुलिस्ताने चारबैत

इक़बाल की है फ़िक्र, कहीं मीर का है रंग
है दाग़ की .जबान, कहीं .जोक़ का है संग
ऐहले कमाल देखते ही हो गये हैं दंग
खोला जो आज बज़्म में दीवाने चारबैत

देखी न होगी आपने इस .फ़न की पार्टी
अब देख लो भोपाल के गुलशन की पार्टी
गाती है चारबैत ये हज्जन की पार्टी
आये हुऐ हैं हाशमी मेहमाने चारबैत

कलाम-मसऊद हाशमी

जहाँ देखो वहाँ सिक्का जमा देते हैं भोपाली
कमाले इलमोफ़न [1] अपना दिखा देते हैं भोपाली

जिसे देखो वह घबराता है आने से मुक़ाबिल में
कहीं नीचा न देखे डर लगा रहता है ये दिल में
ज़बाँ भी डरके मारे बन्द हो जाती है महफ़िल में
लबों पर मुहरे ख़ामोशी लगा देते हैं भोपाली

बड़ी जुर्रात से कोई इत्तेफ़ाक़न सामने आया
उठाकर अपना सीना जो भी ताकत पर उतर आया
उन्हें क़दमों ज़मीं पर खुद को ही गिरता हुआ पाया
गुरूरो [2] तमकनत [3] उसकी मिटा देते हैं भोपाली

मुक़ाबिल में जो आगे आये ये मख़लूक़ कहती है
कोई टोंकी हो या हो रामपुरी किस की हस्ती है
हर एक टोली निगाहें रश्क से सूरत को तकती है
कभी जब चारबैत अपनी उठा देते हैं भोपाली

सुने अग़यार की कैसे अधूरी चारबैतों को
पसन्द कोई करे क्या बेशऊरी [4] चारबैतों को
यहाँ ज़ाहिर ने लिखीं हैं ज़रूरी चारबैतों को
जिसे कहते ही रंग अपना जमा देते हैं भोपाली

कलाम-ज़ाहिर भोपाली

1. साहित्यकार, 2. घमंड, 3. दिखावा, 4. नादानी

होली

चल खेलें सजनवा से मिलजुल के सखी होली
उठ जाये मोरा घुँघटा रंग जाये मोरी चोली

जो दिल पे ग़ुज़रती है किससे कहे दुखयारी
प्यासा है मोरा जीवन सूखी है मोरी सारी
रंग दे मोरी अंगया को तू मार के पिचकारी
अमवाँ के तले आजा है आज सजन होली

सपने में सजन आकर जोबन मोरा लूटे है
आजा मेरे पहलू में अंग अंग मोरा टूटे है
ये रंगे मोहब्बत है दिल से कहीं छूटे है
बस प्यार के फूलों से भरदे तू मेरी झोली

सब हाल सखी कहना प्रीतम जो नज़र आये
रोती हूँ तड़पती हूँ अब कौन जी बहलाये
है कौन जो अब जाकर साजन की ख़बर लाये
सजना है गौरा गौरा सूरत है भोली भोली

ऐ हाशमी अब मुझको तुम और न तड़पाओ
आँखों में तो रहते हो पहलू में चले आओ
सब कुछ में लुटादूँगी तुम पास तो आ जाओ
बन जाओ मोरे दूलहा ले जाओ मोरी डोली

कलाम-मसऊद हाशमी

आलम में हर एक सम्त बहार आयी हुई है
ये दिल पे मेरे ग़म की घटा छायी हुई है,

इस मौसमे गुल में मुझे क्यों दिल से भुलाया
ग़ैरों पे क्या लुत्फ़ मुझे खूब जलाया
किस वास्ते सौतन ने पिया तुमको लुभाया
है कौन सी बैरन जो तुझे भायी हुई है

आई है घटा चर्ख़ [1] पे और बरसे है पानी
मैं किससे कहूँ पी बता अब ग़म की कहानी
बरबाद हुई मुफ़्त में अब हाये जवानी
अफ़सोस के क़िस्मत मेरी बल खाई हुई है

यह बर्क़ [2] यह अन्धयारी यह तन्हाई का आलम
ऐसे में भला कौन सुने किस्सऐ पुरग़म [3]
कोयल भी तो कु-कु की सदा देती है पेहम [4]
शायद के वह मेरी तरह दुख पाई हुई है

कर वेश में जोगन का कहीं ढूँढने जाऊँ
किस देस में जाऊँ के जो पी अपने को पाऊँ
देखूँ कहीं मिन्नत से मियाँ ख़ाँ को मनाऊँ
रो-रो के कहूँ फ़सले बहार आयी हुई है।

कलाम-मियाँ खाँ

1. आकाश 2. बिजली, 3. ग़म से भरी कहानी, 4. बार-बार

आज मेहमान वह परी ज़ाद रहा
ख़ाना वीराँ[1] मिरा आबाद रहा

मिरे सीने से दिया सीना मिला
कभी इज़हार मोहब्बत का किया
कभी ख़ुश हो के ये मुझसे कहा
अब न कहना दिल नाशाद[2] रहा

वह किसी बात पे मस्का मसकी
हाये फिर भरना किसी की सिसकी
कभी झुँझलाके कहा छोड़ो भी
ज़ुल्म हरदम नया ईजाद रहा

क्यों न घर हो मिरा सेहने गुलशन
जबके मेहमाँ रहे वह रश्के गुलशन
मिरा जुल्मतकदह[3] यूँ है रोशन
जो आकर के यहाँ हुस्ने ख़ुदा दाद रहा

जबके जाने लगा वह माहेलक़ा[4]
दमे मेहशर[5] के था इक हश्र बपा
फिर भी आओगे ये जब उससे कहा
हँस के बोला के अगर याद रहा

कलाम–मेहशर

1. मकान, 2. नाकाम, 3. अंधेरा, 4. हुस्न वाला, 5. प्रलय से पहले

शब को प्यारा मिरा मेहमान रहा
घर मिरा सहने गुलिस्तान रहा

मय पिलाई उसे और आप भी पी
जो कदूरत [1] थी वह सब दूर हुई
हर तरह दिल की तमन्ना निकली
इशरतो ऐश का सामान रहा

अपनी उल्फ़त को जताया उसने
सीने से सीना लगाया उसने
रात भर साथ सुलाया उसने
मुझ पे जी जान से कुरबान रहा

कभी कहता था के ओसान गया
कभी कहता था के ग़श तारी हुआ
गरमई वस्ल बुरा हो तेरा
रात भर यार परेशान रहा

होते बेदार मिरे खुफ़ता [2] नसीब
न रहा ख़ोफ़ेअदू [3] ख़ोफ़े रक़ीब [4]
शुक्र मेहशर के हुआ वस्ले हबीब [5]
दिल में कोई भी न अरमान रहा

कलाम-मेहशर

1. नफ़रत, 2. टेढ़ा, 3. दुश्मन, 4. आशिक़, 5. मित्र से मिलाप

गरचे [1] आमादहे [2] .फ़र्यादो बुका [3] है साक़ी
ज़िन्दगी फिर भी मगर नग़मा सरा [4] है साक़ी

कौन समझेगा इसे और तक़ाज़ा इसका
चारह गर कोई है इसका न मसीहा इसका
है निगाहे करम आमेज़ मदोवा इसका
दर्दे दिल की न ज़माने में दवा है साक़ी

करदे रिन्दों [5] को अता दस्ते करम से अपने
बादहे नाब [6] लुटा दस्ते [7] करम से अपने
जाम भर भर के पिला दस्ते करम से अपने
तेरे हाथों से जो पीलें तो रवा है साक़ी

होश अपने तिरे क़दमों पे लुटा बैठे हैं
रस्म पीने की पिलाने की उठा बैठे हैं
सारी दुनियाँ को, ज़माने को भुला बैठे हैं
जाम ऐसा तिरी नज़रों से पिया है साक़ी

क्या कहीं कैफ़ मस्ती को सिवा करती है
इज़्न पीने का हमें और दिया करती है
मय जो गिरती है तो छन छन के गिरा करती है
खूब आँखों पे ये पलकों की रवा है साक़ी

कलाम-मुख़्तार टोंकी

1. यदि, 2. तैयार, 3. रहने की जगह, 4. ख़ुश है, 5. शराबी, 6. पवित्र मदिरा, 7. देने वाला हाथ

चारबैत गायकों से बातचीत

चारबैत कला से पारम्परिक रूप से जुड़े फ़न्कारों से की गई बातचीत से चारबैत की शैली, प्रस्तुति और उसके इतिहास के बहुत से अनछुए पहलुओं के उजागर होने की पूरी उम्मीद है, इसी दृष्टि से चारबैत उस्तादों और गायकों से चर्चा की गई है।

हाजी अब्दुल हमीद, उस्ताद, बज़्में हमीद चारबैत, भोपाल

प्र. हमीद साहब भोपाल की चारबैत गायिकी के इतिहास के बारे में कुछ बताएँ?

उ. भोपाल में चारबैत गायिकी कला का इतिहास भोपाल रियासत के पहले नवाब दोस्त मोहम्मद ख़ाँ के ज़माने से शुरू होता है। नवाब दोस्त मोहम्मद ख़ाँ भारतीय संस्कृति का बहुत अच्छा ज्ञान रखते थे और उन्हीं के ज़माने में इस कला को भोपाल के लोगों ने समझा और जाना।

प्र. भोपाल में पहली चारबैत पार्टी कब बनी और किसने बनाई?

उ. भोपाल में सबसे पहले जनाब पिस्तोल ख़ाँ ने चारबैत अखाड़ा तैयार किया। उसके बाद दूसरा अखाड़ा जनाब मारतौल ख़ाँ ने बनाया। इन्हीं दो अखाड़ों द्वारा चारबैत के कार्यक्रम होते थे। इन प्रारंभिक दो अखाड़ों ने चारबैत की कला की स्थापना और व्यापक प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भोपाल में चारबैत को लोकप्रिय बनाने का श्रेय इन्हीं दो अखाड़ों को जाता है।

प्र. हमीद साहब आपका संबंध किस अखाड़े के उस्ताद से है?

उ. हमारा संबंध उस्ताद पिस्तोल ख़ाँ से है। पिस्तोल ख़ाँ के बाद उस्ताद नसरूल्लाह ख़ाँ, उस्ताद नूर उल्लाह ख़ाँ, उस्ताद चन्दा मियाँ, और उस्ताद रईस मियाँ, इसके बाद मैं ख़लीफा बनाया गया।

प्र. चारबैत कला हमारे देश में किस प्रकार आयी?

उ. चारबैत की कला हमारे देश में अफ़गानिस्तान से आयी। यह बात हमारे उस्तादों और चारबैत के विशेषज्ञों द्वारा साबित है। इसके अतिरिक्त तमाम चारबैत पार्टियाँ इस बात पर एकमत हैं कि यह कला हमारे देश में अफ़ग़ान पठानों के द्वारा आयी। अफ़ग़ानिस्तान में इस कला को पठानी राग भी कहा जाता है। रात के समय अक्सर फुरसत में बैठकर लोग समूह में दफ़ बजाकर चारबैत गाते थे। चारबैत का आरंभ बुनियादी तौर पर अरब से हुआ। अरब में आज भी चारबैत गाया जाता है।

प्र. बज़्में हमीद चारबैत कब स्थापित हुई?

उ. चारबैत बज़्में हमीद पार्टी की लगभग पचास वर्ष पहले स्थापना हुई। इस दौरान हमारी पार्टी ने देश के बड़े-बड़े शहरों में अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत किये हैं और आज भी हमारी बज़्म चारबैत की कला को विकास देने में प्रयत्नशील है। कई अखिल भारतीय प्रतियोगिताओं में हम भाग लेकर सफ़लता प्राप्त कर चुके हैं।

प्र. हमीद साहब आप कब से चारबैत गा रहे हैं?

उ. मैं लगभग 12-13 वर्ष की उम्र से ही इस कला से जुड़ा हूँ। आज भी 70-75 वर्ष की उम्र में चारबैत के अनेक कार्यक्रम में भाग लेता रहता हूँ।

प्र. भोपाल की सबसे पुरानी चारबैत पार्टी का नाम बताएँ?

उ. बज़्में हमीद चारबैत पार्टी ही भोपाल की सबसे पुरानी पार्टी है। वर्तमान में अनेक चारबैत पार्टियाँ भोपाल में इस कला को जीवित रखने और विकास देने में प्रयत्नशील हैं।

प्र. वर्तमान में इस कला के विकास के लिए क्या-क्या प्रयत्न किये जा रहे हैं?

उ. नवाबी दौर के बाद इस कला को सरकार या निजी संस्थाओं द्वारा कोई आर्थिक सहायता नहीं दी जाती है। बल्कि पार्टी के सदस्य ही मिलजुलकर अपने प्रोग्राम रख लेते हैं। कभी-कभी किसी सरकारी संस्था द्वारा भी आयोजनों में आमंत्रित कर लिया जाता है। भारत भवन, मध्यप्रदेश आदिवासी लोक कला परिषद् और अखिल भारतीय अल्लामा इक़बाल अदबी मरकज़ द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में बज़्में हमीद को आमंत्रित किया जा चुका है।

प्र. हमीद साहब कुछ चारबैत लिखने वाले शायरों के नाम बतायें?

उ. भोपाल में पुराने चारबैत लिखने वालों में जनाब बाबू शुजाअत अली, जनाब भैय्या अब्दुल रहमान मुन्शी, जनाब हातिफ़, जनाब सैय्यद रमज़ान अली, जनाब ज़की वारसी, जनाब वकील भोपाली, जनाब मुतरिब भोपाली, शाहिद भोपाली आदि हैं। वर्तमान में जनाब मसूद हाशमी, मसूद रज़ा और डा. इकराम अकरम आदि अच्छी चारबैत लिख रहे हैं। मसूद हाशमी का चारबैत दीवान भी प्रकाशित हो चुका है।

जनाब नन्ने ख़ाँ, उस्ताद, बज़्में हिलाल चारबैत पार्टी, भोपाल

प्र. नन्ने ख़ाँ साहब चारबैत के इतिहास और गायिकी पर कुछ रोशनी डालें?

उ. चारबैत का इतिहास सदियों पुराना है। इसका आरंभ अरब में हुआ। अरब जब युद्ध से विजय प्राप्तकर वापस आते थे उस समय खुशी और कामयाबी का इज़हार करने के लिए दफ़ बजाकर जश्न मनाया जाता था। इसमें शायरी और विशेष रूप से नातपाक गायी जाती थी। चारबैत की कला का आविष्कार अरब में हुआ था। जब अरब लोग क़बाईली जीवन व्यतीत करते थे। चारबैत मुख्यत: चार व्यक्तियों की तकरार (आपस में बातचीत) से आरंभ हुआ और इसकी शौहरत क़बीलों से बढ़ते-बढ़ते शहर की सीमाओं में प्रवेश कर गई।

अरब देशों के बाद यह कला ईरान में स्थानीय फ़ारसी भाषा में गायी जाने लगी। ईरान से यह कला अफ़ग़ानिस्तान में आयी। अफ़ग़ानिस्तान से हमारे देश में इसका प्रवेश हुआ।

प्र. भारत में कैसे इस कला का विकास हुआ?

उ. हमारे देश में यह कला सबसे पहले हैदराबाद में आयी। उसके बाद उत्तरप्रदेश में रामपुर, मुरादाबाद, चाँदपुर, अमराहा, राजस्थान में टोंक, जोधपुर, मध्यप्रदेश में जावरा से भोपाल आयी। रामपुर, टोंक और भोपाल ने इस कला के विकास के लिए केन्द्रीय भूमिका निभाई। भारत में यह कला उर्दू, हिन्दी के अतिरिक्त अनेक भाषाओं में गायी जाती है।

भोपाल के अतिरिक्त इस कला को विकास प्रदान करने में रामपुर मुख्यत: देश का प्रथम स्थान है जहाँ चारबैत की कई पार्टियाँ हैं। रामपुर में जिन शायरों ने चारबैत लिखी उनमें हाफ़िज़ इस्माईल सबर उस्ताद, क़मर उस्ताद, मियाँ ख़ाँ, मेहशर, जौहर और मेहबूब अली आदि बहुत प्रसिद्ध हैं। इन शायरों के अखाड़े भी देशभर में मशहूर हैं। मुरादाबाद अमरोहा और चाँदपुर में भी कई चारबैत पार्टियाँ आज भी इस कला के विकास के लिए प्रयत्नशील हैं। टोंक में भी चारबैत की कला को जानने वाले आज कई लोग मौजूद हैं।

टोंक की मशहूर पार्टियों में उबेद उस्ताद की पार्टी और चमन उस्ताद की पार्टी सर्वश्रेष्ठ है। टोंक में असग़र अली, आबरू, हाफ़िज़ अब्दुल्लाह हैराँ, मिसकीन साहब, ख़फ़ी साहब, नूर साहब, सैय्यद साहब और बैताब साहब आदि शायरों ने बहुत अच्छी चारबैत लिखी हैं।

प्र. मध्यप्रदेश में चारबैत का प्रसार किस प्रकार हुआ?

उ. मध्यप्रदेश में सबसे पहले चारबैत का चलन जावरा में जनाब अदल शाह के द्वारा हुआ। जनाब अदल शाह ने चारबैत की कला के विकास के लिए बहुत कोशिशें कीं। स्वयं चारबैत लिखते थे और गाते थे। अदल शाह का अखाड़ा मध्यप्रदेश का प्रथम अखाड़ा कहलाता है। जावरा में मज़हर उस्ताद साहब और मिख़लास साहब ने भी चारबैत लिखी और गायी हैं।

प्र. भोपाल में चारबैत कब आया?

उ. भोपाल में चारबैत गायन जावरा से जनाब अदल शाह साहब के द्वारा आया। भोपाल में अली शाह ने चारबैत अख़ाड़े को पार्टी का नाम दिया हालाँकि इससे पहले नवाबी दौर में चारबैत की बुनियाद रखी जा चुकी थी। किन्तु उस समय पार्टी की शक्ल नहीं दी गई थी।

प्र. नवाबी दौर में चारबैत का चलन और इसके विकास के लिए क्या उपाय किये गये?

उ. भोपाल में नवाबी दौर में नवाब और उनके परिवार के लोगों के जन्म दिन के अवसर पर कई सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये जाते थे। इसी अवसर पर चारबैत का भी एक भव्य आयोजन किया जाता था। जिसमें भोपाल की चारबैत पार्टियों के अतिरिक्त रामपुर और टोंक से भी चारबैत पार्टियों को आमंत्रित किया जाता था। नवाब साहब उनकी बेगमात, मंत्रीगण, जागीरदार, अधिकारीगण, गणमान्य अतिथियों के अतिरिक्त शहर के तमाम नागरिकों को भी

आयोजन देखने की व्यवस्था की जाती थी। अक्सर कार्यक्रम रात भर चलते रहते थे। नवाब साहब स्वयं चारबैत की पार्टियों को सम्मान और इनाम से नवाज़ते थे और न केवल इस कला में गहरी रूचि रखते थे बल्कि उसके विकास के लिए हर समय तैयार रहते थे। चारबैत का भोपाल में जो कुछ दिखाई देता है वह सब तत्कालीन नवाबों की कोशिशों का ही परिणाम है।

प्र. नन्ने ख़ाँ साहब यह बतायें कि भोपाल में किन-किन शायरों ने चारबैत लिखी?

उ. भोपाल में जिन शायरों ने चारबैत लिखी उनमें सर्वश्री नसीर खाँ, बाबू शुजाअत, खुर्शीद मिर्ज़ा, अब्दुर रहमान मुन्शी, शैरी भोपाली,, हातिफ़ भोपाली, ज़ाहिर भोपाली, सैय्यद रमज़ान अली, ज़की वारसी, वकील भोपाली, शाहिद भोपाली, मसूद रज़ा, मसूद हाशमी, डॉ. इकराम अकरम और लाल मियाँ आदि मुख्य नाम हैं।

प्र. भोपाल में जिन चारबैत पार्टियों ने इस कला के विकास में रूचि ली उनके नाम बतायें?

उ. भोपाल में पूर्व में जो चारबैत पार्टी बहुत मशहूर थी उनमें अदल शाह की पार्टी ही थी जिसमें उस्ताद हिलाल ख़ाँ उस्ताद इरफ़ान उल्लाह ख़ाँ, उस्ताद कल्लू ख़ाँ और उस्ताद रहमान उल्लाह ख़ाँ शामिल थे। बाद में सैय्यद रमज़ान अली और इरफ़ान उल्लाह ख़ाँ ने अपनी अलग-अलग चारबैत पार्टियाँ बना लीं जो आगे चलकर उनके नाम से मशहूर हुईं। भोपाल में लगभग पचपन वर्षों से बज़्में ज़की वारसी चारबैत के कार्यक्रम करती चली आ रही है। इसके बाद बज़्में हमीद भी लगभग चालीस वर्षों से आयोजनों में भाग लेती आ रही है। बज़्में हमीद के बाद बज़्में हिलाल बज़्में शाहिद, अंजुमने गुलिस्ताने चारबैत भी चारबैत के अनेक कार्यक्रम देती रही है। आज भी भोपाल की ये पार्टियाँ चारबैत के विकास के लिये प्रयत्नशील हैं।

जनाब रमज़ानी भाई-संरक्षक, बज़्में शाहिद चारबैत पार्टी, भोपाल

प्र. रमज़ानी भाई हमें ये बतायें कि आप भोपाल में चारबैत कबसे सुन रहे हैं?

उ. चारबैत हम बचपन से सुन रहे हैं। 40-50 साल पहले साज़ो संगीत का इतना रिवाज नहीं था जितना आज है फिर भी भोपाल की जनता हिन्दू-मुसलमान सब मिल जुलकर चारबैत की मेहफ़िलों में भाग लेते थे।

प्र. आपको चारबैत से दिलचस्पी कब से हुई?

उ. मेरे वालिद ख़ुद चारबैत शौक़ से सुनते थे और मुझे भी मेहफ़िलों में ले जाया करते थे तब से ही मुझे चारबैत सुनने का शौक़ पैदा हुआ और आज तक है।

प्र.3. चारबैत किस ढंग से गायी जाती है?

उ. चारबैत का कार्यक्रम प्राय: बड़े मैदान में होता है। जितनी पार्टियों को आमंत्रित किया जाता है उतने ही तख़त लगभग 20-25 फ़िट की दूरी से बिछा दिये जाते हैं और हर तख़त पर एक अखाड़ा आकर बैठ जाता है और मुक़ाबला आरंभ होता है और ये कार्यक्रम सबेरे तक सवाल-जवाब की शैली में चलता रहता है। चारबैत अखाड़े एक दूसरे पर चोट करते हुए खूब से खूब तर जवाब देते हैं।

प्र. क्या आपका भी कोई अखाड़ा है?

उ. जी हाँ। मेरे अखाड़े का नाम है 'बज़्में शाहिद' जिसका मैं अध्यक्ष हूँ।

प्र. चारबैत गाने में जो तब्बल बजाये जाते हैं वो किस तरह बनते हैं?

उ. तब्बल बकरी की खाल से या हिरन चिकारे वग़ैरह की खाल से भी मढ़े जाते हैं। लकड़ी की गोल फ्रेम पर खाल बाल आदि साफ़ करके चढ़ाई जाती है। केवल एक तरफ से ही खाल चढ़ाई जाती है। इसमें एक विशेषता ये भी है कि इस्लाम धर्म में एक तरफ़ सीकी फ्रेम पर खाल चढ़ाकर बजाना जायज़ है। इसलिए इस कार्यक्रम में हर श्रेणी और धर्म के लोग भाग लेते हैं और कार्यक्रम का आनंद लेते हैं।

प्र. आप अपने अखाड़े को लेकर बाहर भी जाते हैं?

उ. जी हाँ। जब बाहर रामपुर या मुरादाबाद से या टोंक से किसी संस्था द्वारा हमें आमंत्रित किया जाता है तो हम अपने अखाड़े को लेकर बाहर भी जाते हैं।

प्र. भोपाल में किन-किन शायरों ने चारबैतें लिखी हैं?

उ. भोपाल में बहुत से शायरों ने चारबैतें लिखी हैं। पुराने शायरों में हातिफ भोपाली, मुंशी ख़ाँ, क़ैसर भोपाली, ज़की वारसी, मुनव्वर ख़ाँ भोपाली, शुजाअत भोपाली, तालिब भोपाली, शैरी भोपाली, कैफ़ भोपाली,, वकील भोपाली आदि। मौजूदा वक्त में शाहिद भोपाली, मसूद भोपाली, मसूद हाशमी इत्यादि अच्छी चारबैत लिखते हैं।

प्र. भोपाल में चारबैत का रिवाज़ कब से क़ायम हुआ?

उ. भोपाल में चारबैत का रिवाज़ नवाब दोस्त मोहम्मद ख़ाँ के दौर से शुरू हुआ। धीरे-धीरे ये फन तरक्की करता गया। भोपाल के आख़िरी नवाब हमीद उल्लाह खाँ की सालगिरह पर तो हर साल मीना बाज़ार में चारबैतों के बाकायदा जलसों का आयोजन होता था।

जनाब मसऊद हाशमी–सचिव, बज़्में ज़की चारबैत पार्टी, भोपाल

प्र. हाशमी साहब पहले ये बतायें कि चारबैत किसे कहते हैं?

उ. उर्दू अदब में चारबैत उस सिन्फ़े सुख़न को कहते हैं जिसके हर बन्द में चार मिसरे हों। जिस तरह ग़ज़ल के हर शैर में दो मिसरे होते हैं उसी तरह चारबैत के हर बन्द में चार मिसरे होते हैं।

प्र. भारत में चारबैत कब से आरंभ हुआ?

उ. भारत में चारबैत का आग़ाज़ बाबर के ज़माने से शुरू हुआ। जिस समय बाबर बादशाह हिन्दुस्तान में दाख़िल हुआ तो उसकी सेना के साथ चारबैत गाने वाले फ़ौजी भी थे जो युद्ध में विजय की खुशी में आयोजित कार्यक्रम में चारबैत गाया करते थे।

प्र. चारबैत के अखाड़े भोपाल के अलावा कहाँ–कहाँ हैं?

उ. चारबैत के अखाड़े भोपाल के अलावा उत्तरप्रदेश में रामपुर, चाँदपुर, अमरोहा और राजस्थान में टोंक आदि में कायम हैं।

प्र. चारबैत गाने का क्या तरीक़ा है?

उ. चारबैत गाने के तरीक़े अलग–अलग हैं, लेकिन जो ख़ास तरीक़ा है वो ये है कि चारबैत एक दूसरे के मुकाबले में हरीफ़ाना अन्दाज़ में गायी जाती है। दो अखाड़े आमने–सामने बैठते हैं और शैरों शायरी में सवाल–जवाब होते हैं जिसमें एक अखाड़ा दूसरे अखाड़े पर विजय प्राप्त करने की कोशिश करता है।

प्र. चारबैत में साज़ और संगीत के इस्तेमाल का क्या तरीक़ा है?

उ. चारबैत में केवल तब्बल ही इस्तेमाल होते हैं। अखाड़े में गाने वाले हर सदस्य के हाथ में तब्बल होता है और इसी को हर चारबैत में बजाया जाता है।

प्र. चारबैत में बाक़ायदा सुरताल क्यों नहीं हैं?

उ. चारबैत में सुरताल होता है जिसको संगीत की कला पर सम्पूर्ण उबूर होता है, वही इसके सुर व ताल को समझते हैं। वैसे चारबैत में सुरताल से ज़्यादा जोश व जज़्बे का मुज़ाहिरा होता है।

प्र. चारबैत और किसी नाम से मशहूर रहा है?

उ. जी हाँ। चारबैत पठानी राग नाम से मशहूर रहा है।

प्र. चारबैत भोपाल में कबसे आयी?

उ. चारबैत भोपाल में रानी कमलापति के ज़माने में आयी जिसे अमीर दोस्त मोहम्मद ख़ाँ जो एक अफ़ग़ानी पठान थे भोपाल में अपने साथ लाये। उनके फ़ौजी दस्ते के पठान अपनी ज़बान पश्तो में अपने मज़बूत बाजुओं से तब्बल पर जश्ने-फ़तह के मौक़े पर चारबैत गाया करते थे।

प्र. भोपाल की जनता में उर्दू और हिन्दी चारबैत का आरंभ कब से हुआ?

उ. बुज़ुर्गों से सुना है कि भोपाल में बाक़ायदा चारबैत के अखाड़े जनाब अब्दुल करीम ख़ाँ के भोपाल आने के समय से स्थापित हुए।

प्र. भोपाल में पुराने चारबैत गाने वाले कौन हैं?

उ. भोपाल में पुराने चारबैत गाने वालों में सनव्वर ख़ाँ, उस्ताद मारतोल ख़ाँ, उस्ताद पिस्तोल ख़ाँ, उस्ताद अदल शाह आदि थे।

प्र. पूर्व में चारबैत गाने वाले कौन थे?

उ. भोपाल में क़रीब पचास साल से उस्ताद रमज़ान अली, उस्ताद ऐहसान अली, हज्जन उस्ताद, इरफ़ान ख़ाँ, कल्लू ख़ाँ, सुलेमान ख़ाँ, जाफ़र ख़ाँ, हमीद ख़ाँ, नब्बू ख़ाँ और करामत ख़ाँ आदि थे।

प्र. वर्तमान में भोपाल में कितने अखाड़े स्थापित हैं?

उ. इस समय भोपाल में चारबैत के छः अखाड़े स्थापित हैं जिनके नाम इस तरह हैं : 1. बज़्में ज़की चारबैत, 2. बज़्में हमीद, 3. बज़्में हज्जन, 4. बज़्में शाहिद, 5. बज़्में गुलिस्ताने चारबैत, 6.बज़्में हिलाल आदि हैं।

प्र. चारबैत अखाड़ों को सरकार की तरफ़ से क्या सहूलतें प्राप्त हैं?

उ. सरकार की तरफ से इन अखाड़ों को अक्सर प्रोग्राम मिलते हैं और इनकी सरपरस्ती होती है। सन 89 में बम्बई में 'अपना उत्सव' हुआ जिसमें सारे भारत से लगभग 4000 कलाकार सम्मिलित हुए थे उसमें भोपाल से मध्यप्रदेश आदिवासी लोक कला परिषद् की तरफ़ से बज़्में ज़की को भेजा गया था जिसने एक माह तक अपनी कला का बेहतरीन प्रदर्शन किया और आर्थिक सहायता भी प्राप्त हुई।

प्र. भोपाल में और कौन-कौन-सी संस्थाएँ चारबैत कराती हैं।

उ. भोपाल में जब से दूरदर्शन केन्द्र स्थापित हुआ है चारबैत के अखाड़ों को अवसर दिया जाता है। भोपाल में भारत भवन और मध्यप्रदेश उर्दू अकादेमी ने भी चारबैत के अखाड़ों का कार्यक्रम आयोजित किया। भोपाल की साहित्यिक संस्थाएँ भी चारबैत के प्रोग्राम कराती रहती हैं।

प्र. चारबैत में किस प्रकार की शायरी गाई जाती है?

उ. चारबैत में हर प्रकार की शायरी गायी जाती है, जैसे नातिया, आशिक़ाना, रक़ीबाना, सावन, त्यौहार, चौमासे, बारह मासे आदि गाये जाते हैं। देहाती बोली में भी चारबैत गायी जाती है।

भोपाल की चारबैत पार्टी के सदस्यों / कलाकारों के नाम

मध्यप्रदेश आदिवासी लोक कला परिषद्, भोपाल ने चारबैत के संरक्षण और दस्तावेज़ीकरण की दृष्टि से भोपाल की प्रमुख छः चारबैत पार्टियों की गायन शैली की ह्यूमेटिक वीडियो रिकार्डिंग इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल के सहयोग से की। भोपाल की जिन मशहूर चारबैत पार्टियों और उनके सदस्य कलाकारों ने अपनी सक्रिय भूमिका निभाई, उनके नाम और कलाम उनकी मण्डली के साथ यहाँ देना अप्रासंगिक नहीं होगा।

मध्यप्रदेश आदिवासी लोक कला परिषद्, भोपाल द्वारा चारबैत कला पर आधारित भोपाल की जिन छः चारबैत गाने वाली पार्टियों का वीडियो कैसेट तैयार किया है, उनके नाम इस प्रकार हैं।

1. बज़्में ज़की चारबैत, 2. बज़्में हमीद चारबैत, 3. बज़्में हज्जन चारबैत, 4. बज़्में हिलाल चारबैत, 5. बज़्में शाहिद चारबैत और 6. अंजुमने गुलिस्ताने चारबैत।

बज़्में ज़की चारबैत पार्टी के सदस्यों/कलाकारों के नाम

1.	जनाब मसऊद हाशमी	सचिव
2.	जनाब मुग़ीस कुरैशी	उस्ताद
3.	जनाब कम्मा ख़ाँ	सदस्य
4.	जनाब अब्दुल लतीफ़	सदस्य
5.	जनाब अब्दुल वाहिद	सदस्य
6.	जनाब हामिद करीम बब्बन	सदस्य
7.	जनाब मोहम्मद शमीम	सदस्य
8.	जनाब मोहम्मद सुहैल	सदस्य

बज़्में हमीद चारबैत पार्टी के सदस्यों/कलाकारों के नाम

1.	हाजी अब्दुल हमीद	उस्ताद
2.	जनाब अबरार अहमद	ख़लीफ़ा
3.	जनाब अनवार अहमद	सदस्य
4.	जनाब हकीम उद्दीन	सदस्य
5.	मोहम्मद हनीफ़	सदस्य
6.	जनाब असमत उल्लाह पप्पू	सदस्य
7.	जनाब रफ़ीक़ अहमद भैय्या नाकेदार	सदस्य
8.	जनाब मोहम्मद आरिफ़	सदस्य
9.	जनाब क़मर ख़ाँ	सदस्य
10.	जनाब सूफ़ी सुलेमान	सदस्य

बज़्मे हज्जन चारबैत पार्टी के सदस्यों/कलाकारों के नाम

1.	जनाब जमील शिफ़ाई	उस्ताद
2.	जनाब शेख़ करीम	ख़लीफ़ा
3.	जनाब मुन्ने दिलशाद	ख़ज़ाँची
4.	जनाब छोटे मुन्ने	सदस्य
5.	जनाब शहूर	सदस्य
6.	जनाब आरिफ़ मियाँ	सदस्य
7.	जनाब शैख़ इक़बाल	सदस्य
8.	जनाब मोहम्मद अंसार	सदस्य
9.	जनाब नवाब ख़ान	सदस्य

अखाड़ा चारबैत बज़्में हिलाल के सदस्यों/कलाकारों के नाम

1.	जनाब नन्ने ख़ाँ	उस्ताद
2.	जनाब अज़ीज़ लाला	ख़लीफ़ा
3.	जनाब अज़ीज़ भाई	सदस्य
4.	जनाब अफ़ज़ल हफ़ीज़	सदस्य
5.	जनाब अब्दुल सलाम ख़ाँ	सदस्य
6.	जनाब आसिफ़ ख़ाँ	सदस्य
7.	जनाब अक्कू ख़ाँ	सदस्य
8.	जनाब नसीम ख़ाँ	सदस्य
9.	जनाब मुन्ने ख़ाँ	सदस्य
10.	जनाब मुन्ने	सदस्य
11.	जनाब मुश्ताक ख़ाँ	सदस्य
12.	जनाब वाहिद भाई	सदस्य

अतिरिक्त पदाधिकारीगण

1.	जनाब सैय्यद इकराम अली	संरक्षक
2.	जनाब अब्दुल हफ़ीज़ ख़ाँ	अध्यक्ष
3.	जनाब अब्दुल बशीर ख़ाँ	सचिव
4.	जनाब अब्दुल मजीद ख़ाँ	निगराँ
5.	जनाब अब्दुल सईद ख़ाँ	ख़ज़ाँची

बज़्में शाहिद चारबैत पार्टी के सदस्यों/कलाकारों के नाम

1.	जनाब रमज़ानी भाई	सरपरस्त
2.	जनाब मोहम्मद मुख़तार	ख़लीफ़ा
3.	जनाब अब्दुल अज़ीम	सचिव
4.	जनाब मज़हर हुसैन	सदस्य
5.	जनाब क़ुदरत अली	सदस्य
6.	जनाब मोहम्मद रईस	सदस्य
7.	जनाब मोहम्मद नवाब	सदस्य
8.	जनाब शप्पू ख़ाँ	सदस्य
9.	जनाब नन्ने ख़ाँ	सदस्य
10.	जनाब मोहम्मद इदरीस	सदस्य
11.	जनाब फ़ज़्लुर रहमान (भैय्या मियाँ)	सदस्य

अंजुमने गुलिस्ताने चारबैत के सदस्यों/कलाकारों के नाम

1.	जनाब लाल ख़ाँ नज़्मी	उस्ताद
2.	जनाब फ़ज़लुर रहमान सिद्दीक़ी	ख़लीफ़ा
3.	जनाब मोहम्मद सलीम	सदस्य
4.	जनाब अब्दुल सईद उर्फ चेना ख़ाँ	सदस्य
5.	जनाब भगवानदास पंथी	सदस्य
6.	जनाब हाजी क़मर अली	सदस्य
7.	जनाब बशीर ख़ाँ	सदस्य
8.	जनाब दलजीत सिंह सरकार	सदस्य
9.	जनाब मोहम्मद समीर	सदस्य
10.	जनाब शब्बीर ख़ाँ	सदस्य
11.	जनाब मोहम्मद ज़ाहिद	सदस्य
12.	जनाब मोहम्मद ताहिर	सदस्य

अतिरिक्त पदाधिकारीगण

1.	जनाब वहीद ख़ाँ	अध्यक्ष
2.	जनाब जलालउद्दीन	सचिव
3.	जनाब मुनव्वर अली	ख़ज़ांची
4.	जनाब ओ.पी. शर्मा	नायब सेक्रेटरी